अफ़कार

दूसरा हिस्सा

उम्मते मुस्लिमा के हालात, असरी तक़ाज़े और दावते फ़िक्र

1. अर्दे मुक़द्दस (फिलिस्तीन) और यहूदी तगल्लुब।
2. इस्लाम में पूरे दाखिल हो जाओ।
3. फिरकों में कौन बटा।
4. म्यूज़िक (गाना) और आखिरत की बर्बादी।
5. लादीनी (नास्तिकता) एक अज़ीम फितना।
6. उलमा को बुरा मत कहो।
7. नमाज़ की अदायगी और नमाज़ियों की गलतियां।
8. जनाज़ा और दफन से मुताल्लिक़ बाज़ उमूर।
9. इस्लाम और औरतों के हुक़ूक़।
10. जुआ और घर की बर्बादी।

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

ALL RIGHTS RESERVED

Book name : Afkar Part 2 (Magazine)

Language : Hindi

Author : Ulma e Ahle Sunnat

Translated by: Afzal Malik & Mohd Saquib

Hijri Date : 22 Safar 1442 H

English Date : 10 Oct 2020 (Saturday)

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: archive.org/details/@tehreek_nizam_e_mustafa_

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

ABOUT US:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized.It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

अर्द ए मुक़द्दस और यहूदी तगल्लुब

:शारेह बुखारी अल्लामा शरीफ उल हक़ आंजादी अलेह रहमा

अर्द ए फिलिस्तीन की अज़मत व बरतरी के लिए ये काफी है के उसे क़ुराने करीम ने अर्द ए मुक़द्दस कहा और हज़रत मूसा कलीमउल्लाह जैसे उलुल अज़्म रसूल की उम्मत को हुक्म दिया गया :

يقوم ادخلوا الأرض المقدسة

तर्जुमा : ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाखिल हो जा

और जब उस बुज़्दिल क़ौम ने वहाँ के मुतागललेबीन , जब्बारीन की ज़हिरी कुव्वत की दास्ताँ सुनकर वहाँ जाने से इंकार कर दिया और यूँ कहा :

"**जब तक ये उसमे हैं हम कभी नहीं जायेंगे, आप और आपके परवरदिगार जाये और हम यहाँ बैठे हैं",**
तो चालीस साल तक सहरा नूरदी के अज़ाब में मुब्तिला रही, इस अर्द ए मुक़द्दस के बारे में फरमाया गया" :

.باركنا حوله

इस सरज़मीन का अदब रब्बुल आलामीन को इतना मलहूज़ है कि वहाँ दाखिल होने वाले एक गिरोह को दाखिले के वक़्त इस अदब से मामूर किया गया ।

"और दरवाजे में दाखिल होते वक़्त सर झुकाए रखना और कहो हमें माफ कर दिया जाए",

लेकिन जब उस मुतामर्रद क़ौम ने उस अदब को मलहूज़ न रखा तो ताऊन जैसी मूज़ी वबा मे गिरफ्तार हुई ।
हमारा किब्ला ए अव्वल और उमम ए माज़ीया का किब्ला ए मुस्तक़िल बैतुल मुक़द्दस है जहाँ हमारे नबी ने सिर्फ हमारे नबी बल्कि नबियों के नबी, नबिउल अंबिया सय्यद उल आलम ﷺने तमाम अंबिया ए इकराम की इमामत फरमायी।
वो बैतुल मुक़द्दस मुतबर्रक माबद जिसकी बुनियाद हज़रत दाऊद अलैह सलाम ने रखी और जिसे हज़रत सुलैमान अलैह सलाम ने मुक़म्मल फरमाया। अगर सफ़ा व मरवह हज़रत हाजरा रदीअल्लाहु तआला अन्हा के कदमों से मस्ख हो जाने की वजह से शआइरुल्लाह में दाखिल हो गई तो वो बाबरकत सरज़मीन जिसे हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैह सलाम से लेकर नबिउल आखिरूज़ ज़माँ ﷺतक हर नबी ने शरफ बख्शा हो जो सबका माबद हो किब्ला हो अक्सर का मसकन हो अज़मत व तक़द्दुस की किस मंज़िल पर होगी इसका अंदाज़ा आसान नहीं।
लेकिन ये अर्द ए मुक़द्दस अपनी अज़मत अपने तक़द्दुस में जितनी रफीउश शान है दीनदारों के लिए इम्तिहान व इब्तिला की उतनी ही बड़ी कसौटी भी है अभी सुन ही चुके क़ौमे मूसा अलैह सलाम ने जब बा अमरे इलाही इस सरज़मीन का रुख किया तो जब्बारीन व ज़ालेमीन का सामना हुआ।

इस अर्द ए मुक़द्दस को तालूत और बुख़्ते नस्सर ने अपने मज़ालिम का निशाना बनाया बाशिंदगाने अर्ज़े पाक के क़त्ल के साथ साथ माबदे मुक़द्दस की ईंट से ईंट बजा दी फिर सलीबी लीडरों ने इस अर्द ए मुक़द्दस में वो ज़ुल्म ढाए के तालूत और बुख़्ते नस्सर के मज़ालिम भी बेहक़ीक़त होकर रह गए। अल्लाह अल्लाह एक वो भी वक़्त था कि उसी अर्द ए मुक़द्दस पर सय्यदना फारूक ए आज़म रदीअल्लाहु अन्हु ने कब्ज़ा किया था लेकिन एक कतरा खून ज़मीन पर न बहा लेकिन उन्हें अमन

पसंदों की औलाद की लाशें उनके खून मे अमन व सलामती के ठेकेदारों, सलीबी दरिंदों ने तैराईं बिल आखिर 90 साल बाद शेर दिल ग़ाज़ी सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी उन सलीबी सूरमाओं को समुंदर पार धकेल कर अर्द ए मुक़द्दस को पाक कर दिया।

फ़िर अर्द ए मुक़द्दस की पासबानी उस्मानी तुर्कों को सौंपी गयी और इसमें कोई शुबा नहीं है के उन बहादुरों ने सदियों तक पूरे यूरोप के मुकाबिल सीना सिपर होकर पासबानी का हक अदा कर दिया सलीबी मारकों में अंजामकार ज़िल्लत व रुस्वाई उठाने वाले यूरोपियन ने अगर्चे हर अहद में अर्द ए पाक पर कबज़ा करने के ख्वाब देखे होंगे मगर उस्मानी तुर्कों से अर्द ए मुक़द्दस छीनने की जुर्रत कभी न कर सके।

खिलाफ़ते इस्लामिया मिट चुकी थी मगर उस्मानी सलातीन ने कुछ न कुछ उसकी आन बान बाकी रखी, मिस्र, शाम, ईराक, हिजाज़, फिलिस्तीन, लिबनान, समरकंद व बुखारा, काशगर,पूरा चीनी तुर्किस्तान उसमानियो के हिलाली परचम के नीचे जमा था उसी इत्तीहाद व विफाक़ के नतीजे में सलतनत ए तुर्की इतनी कवी थी कि सदियों तक ज़ारे रूस पूरी कुव्वत से टकराता रहा लेकिन उसे हमेशा नाकामी का मुँह देखना पड़ा।

यूरोप के मक्कार, रुबाह सिफ़त सियासतदानों ने तुर्कों से बार बार टकराने के बाद ये अच्छी तरह अज़्मा लिया था के जब तक मुसलमानों का शिराज़ह मुंतशिर न किया जाएगा उस्मानी शेरों को ज़ेर नहीं किया जा सकता उसके लिए उन्होंने अपने फ़ुक़तह कालिम के ज़रिये तुर्कों के सूबों में क़ौमी असबियत का शैतान पैदा करना शुरू किया, मिस्रियों को पढ़ाया के तुम शानदार माज़ी के मालिक हो तुम्हारी एक आबरू मंदाना तारीख है तुम क्यों तुर्कों के गुलाम बने हुए हो, शामियों को पढ़ाया तुम जोग्राफीइयाई हैसियत से नस्ली हैसियत से लिसानी हैसियत से तुर्कों से अलग थलक हो उनसे बरतर हो फिर क्या वजह है के तुर्क तुम्हें गुलाम बनाये हुए हैं , ईराकीयों को बरगलाया तुम दौलत ए अब्बासिया के कर्रोफर के वारिस हो तुम तमाम दुनिया ए इस्लाम के मरकज़ रह चुके हो आज क्यों इतने मुर्दा बन गए हो के ये तुर्क तुम पर मुसल्लत हैं, हिजाज़ियों को उकसाया तुम उन मुजाहिदीन की औलाद हो जिन्होंने कलमा ए इस्लाम को सबसे पहले अपनाया और सारे जहाँ में फैलाया तुम्हारा कोई हरीफ नहीं आखिर अब इतने क्यों गिर गए हो के समुंदर पार के तुर्क तुम पर हुकूमत कर रहे हैं फिर अब क्या था मिस्र, शाम, हिजाज़ सबने बा एक वक़्त इंकिलाब जिंदाबाद के साथ साथ ऐलान ए आज़ादी कर दिया इस तरह आना फानन मे कुव्वत ए मुज्तमे जिसने पांच सौ साल तक यूरोप के एवानों में ज़लज़ला डाल रखा था पाश पाश होकर रह गयी। डॉक्टर इक़बाल ने सच कहा है :

इन ताज़ा खुदाओं में बड़ा सबसे वतन है
जो पैरहन उसका है वो मज़हब का कफन है।

फिर क्या था बड़ी आसानी के साथ बर्तानिया ने अर्द ए मुक़द्दस पर कब्ज़ा करके यूरोप के करोड़ों सलीबी दीवानों का कलेजा ठंडा कर दिया सारी दुनिया ए इस्लाम तड़प कर रह गयी, फिलिस्तीन का ग़म मुसलमानों के सीने में नासूर बन कर रह गया वे रोये गिड़गिड़ाए जलसे किये जुलूस निकाले बयान दिये फर्यादें की मगर सब कुछ बे सूद उसी वक़्त के लिए फरमाया गया :

دعائهم لا يستجاب

ऐसे लोगों की दुआएँ क़ुबूल नहीं की जाती अपने गले में फाँसी का फंदा डाल कर जाँ बरी की दुआ करना कुदरत के साथ ठठ्ठा है।
अब भी वक़्त है के अपनी गलतियों का इज़ाला किया जाता लेकिन वतनियत का भूत और सरकश होता गया अलग हो गए थे लेकिन मिलके रहते और कमअज़कम अर्द ए मुक़द्दस की बाज़याबी के मामले मे मुत्तहिद रहते तो शायद सारी दुनिया ए इस्लाम को ये ज़िल्लत आफरीन दौर न देखना पड़ता

नजदियों की तलवारें बे नियाम हुई तो अर्द ए मुक़द्दस की बाज़याबी के लिए नहीं बल्कि हरमैन तैय्येबैन के बेगुनाहों के खून पीने के लिए और जन्नत'उल मोअल्ला और जन्नत'उल बक़ी में आराम फरमाने वाले अस्लाफ के मज़ारात को खोदने के लिए, बिज्जू सिफ़त से गवरनरों से और तवक़्क़ो ही क्या हो सकती है।
अरबों के आपस में इख़्तिलाफ़ात व इंतिशार ए तशननत दर तफर्रुक ने दुनिया ए इस्लाम को वो रोज़ ए बद दिखाया के 1949 में अमेरिका व बर्तानिया ने अपनी इस्लाम व मुसलमान दुश्मनी का नाकाबिल ए तर्दीद सबूत पेश करते हुए बैनुल अकवामी आईन की धज्जियाँ उड़ाते हुए अर्द ए मुक़द्दस की तकसीम करके अपनी कोख से अपनी सियासी नाजायज़ औलाद यहूदि ममलकत इस्राईल को जनम दिया , यहूदि ममलकत का वुजूद सारी दुनिया के मुसलमानों की हमीयत ए मिल्ली, गैरत ए दीनी को खुला हुआ चैलेंज था लेकिन सिवाए कुछ शोरो शगब और दो एक हाथा-पायी और कुछ न हो सका।

अगरचे बर्तानिया ने अपने कब्ज़े के रोज़ ए फरदा ही से सारी दुनियां में बिखरे हुए यहूदियों को घसीट कर फिलिस्तीन में आबाद करना शुरू कर दिया था और हुकूमत के तमाम आला ओहदे और तिजारती व ज़िराअती बाला दस्तियाँ यहूदियों को दीं मगर बर्तानिया की अनथक कोशिशों की बावुजूद फिलिस्तीन में यहूदियों की आबादी 33 फीसदी से ज़ायिद न हो सकी, आईन और इंसाफ का तकाज़ा तो ये था के पूरा मुल्क 66 फीसद से ज़ायिद आबादी और वहाँ के हज़ार हा साल साकिनाने अरब के हवाले करते लेकिन सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ज़ख़्मों से नस्ल दर नस्ल तड़पता हुआ यूरोप अपने आबाओ अजदाद की ज़िल्लत और रुस्वायिओं का इंतिकाम लेने का इससे बेहतर कोई मौक़ा शायद न पाता जोश ए इंतक़ाम में अंधे होने वाले यूरोप ने अपने खुद शाख़्ता आईन की धज्जियाँ बिखेर दीं और अर्द ए मुक़द्दस फिलिस्तीन की तकसीम करके अर्द ए मुक़द्दस के सहीह मालिकों से छीन कर 66 फीसद को 33 फीसद कमीने दरिंदों का गुलाम बना दिया

अरबों की बेकसी अपने नुकता ए उरूज पर पहुँच गयी और जब उन्होंने ये देखा के हमारा हक़ हमें नहीं मिल सकेगा तो ये स्कीम पेश की के इस खित्ता में सेकुलर मखलूत हुकूमत कायम कर दी जाए और दोनों फिरकों को अपनी अपनी आबादी के तनासुब से नुमाईंदगी दी जाए लेकिन कीनापरवर बर्तानिया ने ये भी नहीं सुना और अपनी ज़िद और हठ पूरी करकर रहा हज़ारों साल के बाशिंदों पर नौ आबाद यहूदि कुत्तों को हाकिम बना के छोड़ा दुनिया ए इस्लाम खुसुसन अरब के लिए ये मामूली हादसा नहीं था कौन इस्लामी दिल है जो न तड़पा हो? कौन इस्लामी रूह है जो बेचैन न हुई हो? कौन ज़ुबान है जो चीखी न हो? लेकिन कसर ए बलंघम के अरकान बेहयाई और दरंदगी की उस मंज़िल पर थे जहाँ " हर चे ख्वाहि कुन " फितरत ए सानिया बन जाती है।

रूस से मुतास्सिर इलाकों ने यहूदी रियासत को अमेरिका की मगरिबी एशिया में इजारा दारी का अड्डा कहा आज भी कहते हैं लेकिन मैं इसे यूरोप के सलीबी दरिंदों की ज़िल्लत आमेज़ शिकश्त का इंतिकाम के सिवा और कुछ नहीं जानता अमेरिका और बर्तानिया को इजारा दाराना गुलामी के लिए मगरिबी एशिया में कमी न पहले थी न अब है बहुत से जाह परस्त इक्तिदार के भूके अपनी दीनी गैरत व हमीयत अमेरिका व बर्तानिया को रहेन दे सकते थे और अब भी दे रहे हैं तो इसके लिए दुनिया के इंसाफ पसंद हलक़ा में बदनाम होने, हमेशा हमेशा के लिए लानत का तमगा हासिल करने के लिए यहूदी ममलकत जिनको अपनी सियासी बदकरदारी का ऐलान करने की कोई हाजत नहीं थी हाँ ये ज़रूर है के अगर उर्दुन या नजदी ममलकत को इजारा दारी का अड्डा बनाते तो शाह रिचर्ड की फरार की कालिक बर्तानिया की पेशानी से मिट तो जाती मगर उसके कल्ब व जिगर के इस नासूर का इलाज क्या होता जो फिलिस्तीन पर सलीबी परचम लहराने में पैदा हो गया था उसका मदावा तो उन कीनापरवर इंतिकाम सफ्फाकों के तज़दीक यही था के अर्द ए मुक़द्दस उन फ़ातेहीन के कब्ज़े में न रहे जिन्होंने उनके हममज़हबों से छीना था।

अरब के लिए अब भी वक़्त था के मिल्लत की आबरू बचाने की लिए अपने इक्तिदार की होस से दस्त कश होकर पूरी मिल्लत की पेशानी पर लगे हुए कलंक के टीके को दूर करने की कोशिश करते लेकिन अफसोस सदअफसोस ऐसा न हो सका।
न उर्दुन व ईराक की कश्मकश खतम हो सकी न नज्द और मिस्र मे इत्तीफाक हो सका , न इमाम नवाज़ हरैत पसंद यमनियों में सुलह हो सकी एक दूसरे के खिलाफ आसाबि बल्कि सलाही जंग जारी रखे हुए हैं यही नहीं बल्कि खुद अंदुरुनी तौर पर वो इफ्तिराक व शिक़ाक़ के अल अमान वल हफ़ीज़

यही कर्नल नासिर जो आज रो रहे हैं कल इख़्वानुल मुस्लेमीन के खिलाफ क्या क्या नहीं कर चुके हैं शाह फ़ारूक़ के हामियों पर वो कौन ज़ुल्म नहीं किए जो फ़राएना पहले नहीं कर चुके हैं

ईराक में अंदुरूनी खून खराबा नहीं हुआ के शाम मे नहीं हुआ ज़रा ज़रा से ममलकतें और न पड़ोसियों से सलाह न आपस मे इत्तीहाद अपनी सलाहितें, कुव्वतें अपने भाईयों के खिलाफ इस्तिमाल हो रही हैं इन सब पर तुर्राह ये है के अय्याशी, तन आसानी में वो इनहिमाक के पेरिस व लंदन को पीछे छोड़ने की जद्दोजहद , हर साल अरूस ए नौ से हमकिनारी , हर साल न्यू मॉडल कार, चाहें रहने को घर न हो दुनिया की बेशकीमत से बेशकीमत कपड़े बदन पर, यूरोप के स्पेशल क्वालिटी के सोफे अरबों के खेमों में, शाह सऊद के हरम में इकट्ठी सौ कनीज़े , महल ए सरा के दर व दीवार को छोड़ें, फर्श और ज़ीने गिलाफों से आरास्ता और कैसर व किसरा के तख़्त व ताज के वारेसीन ऐश व इशरत की ज़िंदगियों में ।
दूसरी तरफ यहूदी शब व रोज़ मेहनत व जाँबाज़ी और असलहे की फ़राहमी, मश्क़ ए जंग में मसरूफ हैं किसी यहूदी सरबराह ए ममलकत के महल में एक से ज़ायद बीवीयां न होंगी कोई खेमे में शब व रोज़ गुजरने वाले यहूदी के घर कार न होगी अरब समान ए ऐश व इशरत, लहब व लयेब जमा करते रहे और यहूदी असलहे, अरब मौसम ए बहार में उरूस ए नौ के साथ पेरिस व न्यू यॉर्क में हनीमून मनाते रहे और यहूदी तीरो तफ़ंग की मश्क़ करते रहे अरब अपने भाईयों को ज़ेर करने, शिकश्त देने के जोड़ तोड़ में और यहूदी अरब को सफ़हा ए दुनिया से मिटाने की तैयारी में उसका नतीजा जो निकलना चाहिए था वो निकला अब रोने से क्या हासिल ! मुसब्बब उल असबाब जल्लाह मजदुहु ने हमें पहले बता दिया था
"**और आपस में झगड़ो नहीं के फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई हवा जाती रहेगी**"

उस करीम मौला ने हमें वाज़ेह तौर पर बता दिया था
"ज़रूर तुम मुसलमानो का सबसे बढ़ कर दुश्मन यहूदी और मुशरिकों को पाओगे"

काश के माज़ी करीब की ज़िल्लत और तबाही अरबों की लिए ताज़ियाना इबरत होती दुनियाँ की ज़लील तरीन मुट्ठी भर क़ौम से इतनी संगीन शिकश्त खाने के बाद भी आँखें खुल जातीं तो अफसोस कम होता मगर अब भी न तो क़ौमीयत का भूत उतरा और न आपस की कीनापरवरी व हुसूल ए जाह व माल की लड़ाई खत्म हुई अब भी वही फूट अपने भाई को सफह ए हस्ती से मिटाने के मशवरे

नील के साहिल से लेकर ताबखाक काशगर
एक हो मुस्लिम हरम की पासबानी के लिए।

इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल हो जाओ

:मौलाना फ़ैज़ुल आरफीन रज़वी साहब

इस वक़्त उममते मुस्लिमा जिन चीजों से गुज़र रही है वो बयान करने के काबिल नहीं है हर शख्स को अपनी जिम्मेदारी ख़ूब अच्छे तरीके से निभानी चाहिए और उस का हल तलाश करना चाहिए के वो कौन सी गलतियां और खामियां हैं के जिन की वजह से आज इन आज़माइश मे मुबतिला हैं और एक बात याद रखें जब तक हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत को नेमत नहीं समझेंगे तब तक हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को असल मुनइम नहीं समझेंगे।
अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमे दो तरह की नेमतें अता फरमाई हैं एक तो है ज़ाहिरी नेमत जैसे खाना पीना दौलत मालदारी और बहुत सी चीज़ें और दूसरी और सब से बड़ी नेमत ईमान की नेमत है इस से बड़ी कोई नेमत नहीं हो सकती अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हम पर बहुत बड़ा फ़ज़ल व अहसान है कि उस ने हम सब को एक अज़ीम नेमत अता फरमाई और वो ईमान है और ये इतनी बड़ी नेमत है कि इसका शुक्र भी अदा नही कर सकते और इस बात का हम तसववुर भी नही कर सकते कि वो कितनी बड़ी नेमत है लेकिन कुछ लोग इस नेमते अज़ीमा को नेमत नही समझते हैं और पूरे तौर पर इस्लाम के अहकामात पर अमल नही करते बाज़ काम मुसलमानों वाले और बाज़ काम गैरों वाले ये क्या है ? जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमे इतनी बड़ी नेमत से नवाज़ा है तो हमे चाहिए कि हम इसकी कद्र करें और इसको नेमत समझें और इसके तमाम अहकामात पर अमल करें।
वो लोग जो बाज़ काम मुसलमानो वाले करते हैं और बाज़ काम गैरों वाले ऐसे ही लोगों के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरान पाक मे इरशाद फरमाया :

'يا ایها الذین امنو ادخلو فی السلم کافۃ ولا تتبعوا خطوات الشیطان انہ لکم عدو مبین'

तर्जुमा: यानी ऐ ईमान वालों इस्लाम मे पूरे तौर पर दाखिल हो जाओ और शैतान के कदमों पर न चलो वो तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है ।

ये आयते करीमा कब नाज़िल हुई किस मौके पर नाज़िल हुई तो मुफ़स्सिरीन किराम ने बयान फरमाया: कि अहले किताब में से अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के असहाब हुज़ूर सय्यदे आलम ﷺ पर ईमान लाने के बाद मूसा अलैह सलातो व तसलीम की शरियत के बाद अहकाम पर अमल करते थे जैसा के हफ्ते के दिन की ताज़ीम करते थे और हफ्ते के दिन शिकार से बचने को लाज़िम जानते थे और ऊँट के गोश्त और ऊँट के दूध से भी बचते थे और ये ख्याल करते थे के ये चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह हैं उन का करना ज़रूरी नहीं लेकिन तौरैत मे इन चीजों से बचने को कहा गया है तो इस वजह से इन काम के तर्क करने में कोई इस्लाम की मुखालफ़त भी नहीं है और मूसा अलैह सलाम की शरियत पर अमल भी होता है इस पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फरमाया गया के पूरे तौर पर इस्लाम के अहकामात की पैरवी करो यानी तौरैत के अहकामात अब मंसूख हो गए अब उन पर अमल न करो ।

अब सवाल ये होता है कि इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल होने का मतलब क्या है तो उसको समझने के लिए जरूरी है कि हम ये जान लें कि मुसलमान किसको कहते हैं? और मुसलमान सही माइनो मे कोन है? तो इसलाम नाम है उस मुक़म्मल निज़ामे हयात का जो क़ुरान व सुन्नत मे बयान हुआ अब चाहें इसका ताल्लुक अकाइद व इबादत से हो या मामूलात से हो या मुआशरत से हो या सियासत से हो या हुकूमत से हो या तिजारत व कारोबार से हो अलगर्ज़ इसलाम के अहकाम चाहें वो जिंदगी के किसी भी हिस्से से मुताल्लिक़ हों कामिल मुसलमान बनने के लिए जरूरी है कि उन्हें सच्चे दिल से क़ुबूल करके अपनी जिंदगी में लाया जाए इस में उन लोगों के लिए एक बहुत बड़ा पैगाम है के जिन्होंने दीन को सिर्फ नमाज रोज़े और कुछ मखसूस इबादत तक ही महदूद कर रखा है और

रहे मामूलात और मामूलात यानी आपस में रहन सहन के तौर तरीके इस में अपने आप को आज़ाद समझते हैं और इस्लाम के तरीके पर अमल नहीं करते हैं।

और इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल होने का मतलब ये है कि इस्लाम में ऐसे दाखिल हो जाओ जैसे कोई शख्स कमरे में दाखिल होता है और जब बाहर वाले उसको देखते हैं तो नज़र नही आता सिर्फ और सिर्फ कमरा नज़र आता है तो इस्लाम में ऐसे दाखिल हो जाओ जब के तुम को कोई देखे तो तुम नज़र न आओ बल्कि इस्लाम नज़र आए।
आप लोग ये सोचें के सिर्फ कुर्ता पजामा पहन कर नमाज रोज़ा रख कर पूरे तौर पर इस्लाम में दाखिल हो जाएंगे जबकि हमारे बाकी काम वैसे ही रहें हमारे मआशी मामलात हमारे शादी ब्याह और आपस में लेन देन इनके अलावा बहुत से वो काम जो इस्लाम के अहकाम के खिलाफ़ हैं तो हमारे ये सब मामलात वैसे ही रहें तो क्या हम लोग पूरे तौर पर इस्लाम में दाखिल हो जाएंगे?, बिल्कुल नहीं हम जब तक नमाज़ पंजगाना रोज़े वगैरह के साथ साथ इस्लाम के तमाम अहकामात और फरामीन पर अमल नहीं करेंगे तब तक हम कामिल मुसलमान नहीं कहलाएंगे और तब तक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फरमान "ادخلو فی السلم کافة में दाखिल नहीं माने जाएंगे ।

अब देखें शादी ब्याह में सिर्फ और सिर्फ एक ही काम इस्लाम के मुवाफ़िक़ होता हुआ दिखाई देता है और वो है निकाह इस के अलावा बाकी काम ढोल बाजे नाच गाने आतिश बाजी वगैरह वगैरह उन के ज़रिए शादी में इस्लाम का जनाज़ा उतर रहा होता है और अब मस्जिद का हाल देखें मस्जिद मे हमारा रवैया क्या है हम नमाज अदा करने के बाद उसी जगह पर बैठकर एक ग्रुप बना लेते हैं और फिर बेकार बातों का सिलसिला शुरू कर देते हैं और फिर उसके बावज़ूद भी हम अपने आप को पक्के मुसलमान और पक्के नमाज़ी समझते हैं।
उलमा- ए- इकराम ने आयते करीमा:ادخلوا فی السلم کافہ के तहत बहुत ही उम्दाह बात लिखी है और वो ये है के दाड़ी मुंडवाना मुशरिकों का लिबास पहनना या उन जैसा लिबास पहनना अपनी मुआशरत बेदीनों जैसी करना ये सब ईमान की कमजोरी की अलामत हैं जब आप मुसलमान हो गए तो सूरत व सीरत ,जाहिर व बातिन , इबादत व मामलात, रहन सहन ,मेल बरताओ, जिंदगी मौत , तिजारत व मुलाज़िमत इन तमाम चीजों मे अपने दीन पर अमल करो ।

और इस आयते करीमा से ये भी मालूम हुआ कि मुसलमान का दूसरे मज़हब या दूसरे दीन वालों की रिआयत करना शैतानी धोखे में आना है और उलमा- ए- इकराम ने एक और बात लिखी है कि इस्लाम एक इमारत है तो जो शख्स इस इमारत से बाहर हो जाए तो वो दीवार का साया तो हासिल कर सकता है लेकिन गर्मी ठंड और बारिश से महफूज नहीं रह सकता और जो इस इमारत के अंदर आ जाए तो वो पूरे तौर पर महफूज हो जाता है अब देखिए कि मुनाफेकीन ने कलमा पढ़ा उन्होंने इस्लाम की दीवार की आड़ तो ले ली तो इस वजह से वो क़त्ल से बच गए इस लिए के वो ज़ुबान से कलमा पढ़ते थे मगर शैतान से न बच सके दोज़ख की सर्दी गर्मी से न बच सके तो गोया कि वो इमारत में दाखिल नहीं हुए यानी पूरे तौर पर वो इस्लाम में दाखिल नहीं हुए तो इसी वजह से हमें ये हुक्म दिया गया कि इस्लाम की दीवार से साया हासिल न करो इमारत में दाखिल हो जाओ यानी इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल हो जाओ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है कि हमें गुनाहों से बचने की तौफीक अता फरमाए और नेक काम करने की तौफीक अता फरमाए और हमें सच्चा पक्का मुसलमान बनाए और इस्लाम के तमाम अहकामात पर मुक़म्मल तरीके से अमल करने की तौफीक अता फरमाए।

फिरकों में कौन बटा ?

:मौलाना नफीस अहमद मिस्बाही साहब

तारीख के मुताआले से ये बात रौज़े रौशन की तरह अयां होती है के किसी भी क़ौम की उरूज व तरक्की फलाह व बेहबूद मुताद्दिद वसाइल के साथ एतिक़ादि हमआहंगी, आपसी भाईचारगी , जज़्बा ए अखुब्बत व मुहब्बत की फ़रावानी और नज़रयाती यकसानियत पर मुन्हसिर होती है, जुंहि इत्तीहाद व इत्तीफ़ाक की ये सिलसिला तुज ज़हब कड़ी टूटती है तो इंतिशार व इफ्तिराक, जुमूद व तात्तुल और ज़वाल व पस्ती का ज़ुल्मत ज़दाह बाब बतद्रीज सफहा ए क़ायनात पर खिलना शुरू होता है, फिर देखते ही देखते हर तरफ उस क़ौम की जबीन पर ज़िल्लत व हज़ीमत , जोरो सितम और ज़ुल्मत व बरबरियत की इबारत का मरकूम होना उसका लायन्फक जुज़ बन जाता है । इस इत्तीहादो इनज़िमाम का मुसबत पहलू अहले किताब यहूद व नसारा की तौहीद परस्ती से भी अयां है।
जब तक इन क़ौमों में इत्तीहाद का अंसर जिंदा रहा उन कौमों ने दुनिया भर में हुकूमत की (बिलखुसूस क़ौमे यहूद ने) जुंहि उनमें उस अंसर का फकदान हुआ ज़िल्लत व पस्ती उनका मुक़द्दर बन गयी। इस लिए क़ुरान ने उम्मते मुहम्मदिया को पिछली क़ौम की गलतियों से इब्रत लेने का हुक्म देते हुए फरमाया

"لقد كان في قصصهم عبرة لأولى الألباب"
बेशक उनकी खबरों से अक़लमंदों की आँखें खुलती हैं।

जब गुज़श्ता क़ौम में से क़ौमे यहूद की तारीख पर एक ताएराना नज़र डालते हैं तो पता चलता है के ये वो क़ौम है जिन पर बेशुमार खुदाई इनआम व इकराम हुआ है। यही वो बाबरकत क़ौम है जिन्हें रूए क़ायनात की क़ौमों में अफज़लियत का तमगा नसीब हुआ। फरमाने इलाही है :

" وأني فضلتكم على العالمين "
और ये के तुम्हें इस सारे ज़माने पर बढ़ाई दी।

यही वो आलमी ताकतवर क़ौम है जिनमे तकरीबन नौ सौ सदी कब्ल (ईस्वी) हज़रत दाऊद व सुलैमान अलैह सलाम आए जिनकी हुकूमत का दायरा रियासती सतह से परवाज़ करते हुए आल्मी सतह तक जा पहुँचा था मगर जब इफ्तिराक व इंतिशार और ज़ईफ ईमानी ने सर उभारा तो फिर कहीं सर उठाने के क़ाबिल न ठहरे।

इस इफ्तिराक के अस्बाब में से एक सबब पहले दफा तौरैत के नुस्खे का मंज़रे आम पर आना भी ठहरता है। ये वो नुस्खा है जो तकरीबन तौरैत के नाज़िल होने के पांच सौ साल बाद " हल्किया " नामी पादरी के हाथों मंज़रे आम पर आता है। इसके बाद फिर तकरीबन दो सौ साल बाद (444 क़ब्ल ईस्वी) "अज़रा " नामी राहिब के हाथों एक और नुस्खा दस्तीयाब होता है, और ये दोनो नुस्खे एक दूसरे से बहुत मुख्तलिफ होते हैं। और फिर जब यहूदियों की ऐसी जंग व जिदाल, नफ़सानी ख्वाहिशात और मुतामर्रद सरकश तबीयतों ने मज़कूराह नुस्खों पर अमल पैरा होने को शौक जाना तो हज़रत ईसा अलैह सलाम की विलादत के बाद तौरैत की मनमानी तफ़सीर तौज़ीह की गई और " तलमूद " नामी किताब मंशा ए शुहूद पर आई, जिसमे न खुदाई अज़मत व तक़द्दुस का कोई पहलु बरकरार रखा गया और न ही कोई हुरमते अंबिया का पास व लिहाज़, तो ज़ाहिर है के इन नुस्खों का बराह ए रास्त मनफ़ी असर क़ौमे यहूद पर पड़ा था और सदूक़िईन, फ़िरोसिईन, कुतबा , अनान्या और सामरा वगैरह नामी फिरक़े मारीज़े वुजूद में आए, और इत्तीहादी कुव्वत का शीराज़ह मुंतशिर हो गया।
इस क़ौमे ए यहूद की रुश्द व हिदायत के लिए आज से तकरीबन दो हज़ार बरस कब्ल हज़रत ईसा अलैह सलाम फर्श ए गीती पर तशरीफ लाए। क़ुरआन में है :

"وإذ قال عيسى ابن مريم يبني إسرائيل إني رسول الله إليكم "

तर्जुमा: और याद करो जब ईसा इब्ने मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल ! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ।

उनकी आमद से खुदाए वादहु लाशरीक की इबादत हर चार जानिब होने लगी, माद्दियत परस्ती का सहर टूटने लगा। रूहानियत का गलबा हर सू दिखने लगा, जज़्बा ए मुहब्बत व अक़ीदत परवान चढ़ा, एतिक़ादि व नज़रयाती यकसानियत ने लोगों को एक दूसरे के करीब किया। बयीं तौर इत्तीहादी कुव्वत मज़बूत से मज़बूत तर होती चली गयी। हर तरफ तालीमाते ईसा अलैह सलाम का असर दिखने लगा। पर मादह परस्त क़ौम यहूद को रूहानियत की ये खुश गवार फ़िज़ा रास न आ सकी। हज़रत ईसा अलैह सलाम को फांसी की सज़ा हुकूमते रोम की तरफ से मुकर्रर करवाने में कामयाब हो गई। पर क़ादिर ए मुतलक़ ने एन आख़िरी वक़्त में अपने नबी को आसमां में उठा लिया और उनकी जगह उन्हें एक खबिसुन नफ्स शागिर्द जो इस मज़मूम फेल की अंजामदेहि मे सरगरम था उसकी हज़रत ईसा अलैह सलाम जैसी सूरत बनाई और उसको नज़रे सलीब किया गया

"وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم"

तर्जुमा : और है ये के न उन्होंने उसे क़त्ल किया और न ही उसे सूली दी बल्कि उनके लिए उनकी शबीह का एक बना दिया गया, और फ़रमाया :

"وما قتلوه يقينا بل رفعه الله إليه "

तर्जुमा : और बेशक उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ उठाया।

अब यहीं से क़ौमे मसीह अलैह सलाम में इख़्तिलाफ की हवा गर्दिश करने लगी। बाज़ ने कहा : उन्हें सूली पर लटकाया गया। बाज़ ने कहा नहीं! बल्कि वो आसमान में उठा लिए गए और फिर ये तौहीद परस्त क़ौम रफ्ता रफ्ता तस्लीस(तीन खुदा का अक़ीदा रखना) के भी काइल होने लगी।
साथ ही उन पर नाज़िल होने वाली मुक़द्दस किताब इंजील शरीफ का नुस्खा भी बरवक़्त दर्याफ्त न हो सका, हज़रत ईसा अलैह सलाम की वफ़ात के 60, 65 साल बाद इंजील का नुस्खा बनाम (इंजील मर्कस) वुजूद में आया, फिर मुरूर ए ज़माना के साथ और तीन नुस्खे इंजील मति, इंजील लोका, इंजील यूह्ना मारीज़े वुजूद में आए। उनमें का हर नुस्खा एक दूसरे के मुगाएर था, ऐसे में ज़ाहिर ही है के ईसाइयों में जो इत्तीहादी कुव्वत फौलाद की सूरत में थी उसे मुन्तशिर होना ही था सो वो आर्यूस, बरबरानिया, मकदूनियूस और नस्तूरीन वगैरह फिरकों की सूरत में बिखर चुकी थी।

यही वजह है के क़ुरान ने उम्मते मुस्लिमा को जगह जगह इत्तिहाद की दावत दी है ताकि गुज़िश्ता क़ौमों की तरह ये भी टुकड़ों में न बटे, इरशादे रब्बानी है :

"إن اللذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم في شئ "

तर्जुमा : वो जिन्होंने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गिरोह हो गए, ऐ मेहबूब! तुम्हें उनसे कोई इलाका नहीं.

"وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا وتذهب ريحكم واصبروا"

तर्जुमा : और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं के फिर बुज़्दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई हवा जाती रहेगी।

"ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد ماجاءهم البينات"

तर्जुमा : और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उनमे फूट पड़ गई बाद उसके कि रौशन निशानियाँ उन्हें आ चुकी थीं।
हदीस पाक में भी जगह जगह इत्तिहाद पर ज़ोर दिया गया है

"المؤمن للمؤمن كالبنيان يشد بعضه بعضا"

तर्जुमा : एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए इमारत के मानिंद है जो एक दूसरे को तक़वियत बख्शता है।

" ترى المؤمن في تراحمهم وتودهم وتعاطفهم كمثل الجسد إذا اشتكى عضو تداعى له سائر الجسد بالسهر والحمى"

तर्जुमा :मोमिनों की मिसाल एक दूसरे से रहम करने, एक दूसरे से मुहब्बत करने, एक दूसरे की खैर ख्वाही करने में जिस्म के मानिंद है जब उनमे से कोई उज़्व बीमार होता है तो उसके लिए पूरा जिस्म दर्द और बुखार के साथ रात जगाई करता है ।

और जमाअत से अलग होने वालों के लिए सख्त वईद आई, सरकार ﷺफ़रमाते हैं :

من فارق الجماعة مات ميتة الجاهلية.

तर्जुमा : जो जमाअत से अलग हुआ (और उसी हालत में मौत हो गई) तो जाहिलियत की मौत मरा।

इन फरमूदात व इरशादात में इस जानिब ज़ोर दिया गया है के मुसलमान आपस में एक दूसरे के साथ मुत्तहिद होकर रहें। इख़्तिलाफ व इन्तेशार की मस्मूम फ़िज़ा से मुस्लिम मुआशरे को मकदर होने से बचाएं।

मुस्लिम मुआशरे में इत्तिहाद व मुहब्बत के मुस्तहकम रिश्ते का कयाम आपसी ऐतकाद व नज़रयात की यगानगत व यकसानियत पर मब्नी है, किसी भी फर्द या गिरोह का अकीदह अगर दूसरे फर्द के अकीदे से मुतासादिम होगा तो लामुहाला वहाँ अदावत व इन्तेशार की चिंगारियाँ फूटेंगी और आपसी अखुब्बत व मुहब्बत को जहाँ ज़क पहुँचेगा वही रूहानी लज़्ज़तों से भी मेहरूमी नसीब होगी। इसलिए अब ज़रूरत पेश आई इस बात की के वो कौनसा मनहज हो सकता है जिसे अपनाकर मुस्लिम मुआशरा अमन वा आश्ती, ताकत व कुव्वत और उम्मते खैर का मिस्दाक़ ठहर सकता है? क़ुराने करीम ने इस जानिब रहनुमाई की और फरमान हुआ :

"واعتصموا بحبل الله جميعا."

इमाम कतादह और सुदी ने फ़रमाया के हब्लुल्लाह से मुराद क़ुरान पाक है। हज़रत इब्ने मसूद रदिअल्लाहु अन्हु से मर्वि है के सरकार ﷺने इरशाद फ़रमाया :

" إن هذا القرآن هو حبل الله المتين، وهو النور المبين، والشفاء النافع،وعصمة لمن تمسك به، ونجاة لمن تبع به

ये क़ुरान पाक अल्लाह की मज़बूत रस्सी है , वाज़ेह रौशन, शिफा व नफा बख्श किताब है। और उसके लिए मज़बूत पनाहगाह है जिसने इसे पकड़ा , और उसके लिए ज़रिया ए निजात है जिसने इसकी पैरवी की।

जब हम "أمة وسطا" (सब उम्मतों में अफज़ल) के अव्वलीन मुखातिब सहाबा ए इकराम की जमात को देखते हैं तो मालूम होता है के वो दीन के उसूल व फुरु पर कामिल तौर पर कारबंद थे। वो खुदा के

हक़ में सिफ़ात ए वाजिबा व मुस्तहीला के कायल थे। यूँही नबी के हक़ में नबी की लिए उमूरे वाजिबा और उमूरे मुस्तहीला का ऐतकाद रखते थे, उनका हद दर्जा ऐहत्राम फरमाते थे

"وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا"

(**और जो कुछ रसूल तुम्हें अता फरमायें वो लो और जिस से मना फरमायें बाज़ रहो**) और

"قل إن كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله "

(**ए मेहबूब! तुम फरमा दो के लोगों! अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फरमाबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा**) की अमली तफ़्सीर थे। उनकी इस ईसारो कुर्बानी का नतीजा उन्हें खुदा की रज़ा की सूरत में हासिल हुआ। फरमाने खुदावंदी है :

"والسابقون الأولون من المهاجرين والأنصار والذين اتبعوهم بإحسان رضي الله عنهم ورضوا عنه "

और सब में अगले पहले मुहाजिर और अंसार और जो भलाई के साथ उनके पैरों हुए अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी। हमारे प्यारे आका ने उनके हक में फ़रमाया के :

" لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي، لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا، مَا أَدْرَكَ مُدَّ أَحَدِهِمْ، وَلَا نَصِيفَهُ"

मेरे असहाब को बुरा मत कहो, क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है के अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना (अल्लाह की राह में) खर्च करे तो उनके दिया एक मुद (आधा किलो) या आधा मुद के बराबर भी नहीं हो सकता , और नबी ए पाक उम्मत को दस्तूरे दीन व दुनिया देते हुए फ़रमाते हैं :

"فعليكم بسنتى وسنة خلفاء الراشدين تمسكوا بها"

तो तुम मेरी सुन्नत की और खुलफ़ा ए राशेदीन की सुन्नत की पैरवी करना, उसको मजबूती से थामना।

इन नुसूस से साबित हुआ के जिस गिरोह ने तरीका ए सहाबा को इख़्तियार किया उन जैसा अक़ीदाह रखा वो दीन व दुनियाँ की नेमतों और रज़ा ए मौला से सरफ़राज़ हुआ, और जो मसलक ए सहाबा से मुन्हरिफ़ हुआ वो अज़ाबे इलाही और उसके इताब का शिकार हुआ।
तारीख में "ولاتفرقوا" पर अलमे बगावत बुलंद करने वालों में सर ए फ़हरसत खारजी नज़र आते हैं।
उनके बाद शिया फिर नास्बिया का ज़िक्र आता है और ये तमाम फिरक़े मौला अली करमुल्लाह वजहुल करीम के दौरे इमारत में ज़ाहिर हुए, फिर तकरीबन पहली सदी हिजरी के बाद फिरक़ा ए मुताज़िला का वुजूद सामने आता है। इस तरह दीगर कई फिरकों मुजस्सिमिया, किरामिया, मुशब्बह वगैरह का जनम महद ए क़ायनात पर होता है और उन सबके अकाइद व नज़रयात मस्लके सहाबा से मुतासादिम होते हैं।
इसके बावुजूद उनका दावा होता है के हम मनहजे सहाबा पर गामज़न हैं, हमारे उसूल क़ुरान व हदीस की रौशनी में मुनज़बित हैं। और हम ही जन्नती फिरक़ा हैं ऐसे पुर फ़ितन वक़्त में हमारे लिए हिदायत की रौशनी हदीसे पाक की नूरी किरणों से फूटती है और हमें सवादे आज़म की इत्तेबा पर पुरज़ोर ताकीद की जाती है। सरकार ﷺ फ़रमाते हैं :

"لا يجمع الله هذه الأمة على الضلالة أبدا "

अल्लाह अज़'वजल कभी इस उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं फरमाएगा ।
और दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

"يدالله على الجماعة فاتبعوا السواد الأعظم، فإنه من شذ شذ في النار"

अल्लाह अज़'वजल का दस्ते क़ुदरत जमाअत पर है लिहाज़ा सवादे आज़म की पैरवी करो, इस लिए के जो उससे अलग होगा वो जहन्नम में होगा ।
एक और मुकाम पर फ़रमाते हैं :

"فإذا رأيتم اختلافا فعليكم بالسواد الأعظم .إن أمتي لا تجتمع على ضلالة "

मेरी उम्मत गुमराही पर इकट्ठा नहीं होगी जब तुम इख़्तिलाफ देखो तो सवादे आज़म को लाज़िम जानो।

इन नुसूस से पूरे तौर पर वाज़ेह हो गया के सवादे आज़म सहाबा ए इकराम की जमाअत है और उनके बाद उनके मसलक पर ग़ामज़न ताबेईन तबा ताबेईन और उनके बाद उनके नहज को अपनाने वाले दौरे हाज़िर तक तमाम खुश बख़्त सहीउल अक़ीदह मुस्लिम जमाअत हैं जिन्होंने मन्हजे सहाबा को दिलो जान से अपनाया और दीनी उसूलियात से कभी रुगरदानी नहीं की। ऐसे में कोई गिरोह तालीमाते क़ुरान व हदीस से रुगरदानी करके सवादे आज़म से बर्गशता होकर नई जमाअत की बिना डाले और सहीउल अक़ीदह जमाअत पर तिफरकाबाज़ी का इल्ज़ाम धरे तो चाहिए के वो अज़ खुद अदल व इंसाफ का ऐनक लगाकर दकीक नज़रों से दीनी उसूलियात का ब नज़रे अमीक मुतआला करे और दूसरों पर तानाज़नी से बाज़ रहे।

तालीमाते क़ुरान व हदीस और मसलके सहाबा से इन्हिराफ़ करने वाली आल्मी जमाअत में एक नाम वहाबी जमाअत का भी आता है जो के बारहवीं सदी हिजरी के आखिर में मुहम्मद बिन अब्दुल वह'हाब नजदी (1703 -1792) और मुहम्मद बिन सऊद के हाथों अंग्रेज़ों के इशारे पर वुजूद में आई जिसके बुनियादी मकासिद में सियासी सतह पर उम्मत में इफ्तिराक व इन्तेशार पैदा करके मुसलमानों को कमज़ोर करना, आपसी इत्तिहाद का शीराज़ह तार तार करके अरबों को क़ौमीयत का अहसास दिलाकर तुर्कों की बाला दस्ती हरम शरीफ से बिलखुसूस और आलमे इस्लाम से बिलउमूम खात्मा करना शामिल था।

अनवर शाह कश्मीरी ने इब्ने अब्दुल वह'हाब का कुछ इस अंदाज़ में त'आरूफ किया है " मुहम्मद बिन अब्दुल वह'हाब बेवकूफ और कम इल्म शख्श था और मुसलमानों की तकफीर में बहुत उजलत करता था"

इब्ने अब्दुल वह'हाब अख्खड़ मिजाज़, कम ज़हन, गुस्ताखे रसूल व सहाबा वाकेअ हुआ था। ज़ाएरीन ए रौज़ा ए रसूल पर ऐतराज करता, अपने और अपने हम मस्लक अफ़राद के अलावा तमाम दुनिया के मुसलमानो को मुशरिक जानता, तकलीदे शखसी को नाजायज़ समझता और कहता जिसने तकलीद की उसको उसने रब तस्लीम किया और जिसने रब तस्लीम किया वो मुशरिक ठहरा। हुज़ूर ﷺसे या किसी बुजुर्ग से शफाअत तलब करना शिर्क करार देता यूँही वसीले को भी हराम समझता था।

बर्रे सगीर में कुछ इस तरह के अफकार ए फासिदा व बातिला की तर्जुमानी शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहेलवी के भाई शाह अब्दुल गनी के घर 1193 हिजरी को पैदा होने वाले इसमाईल देहेलवी के हाथों तक़वीयतुल ईमान की सूरत में आई जो के इब्ने अब्दुल वहहाब की तलखीस शुदह " किताबुत तौहीद " के तरज़ पर लिखी गई थीं, इस किताब के मंज़रे आम पर आते ही मुसलमानों में बड़ा झगड़ा और इख़्तिलाफ पैदा हुआ। अंग्रेज़ों ने इसे गनीमत जानते हुए इसमाईल देहेलवी और उसके पीर सैयद अहमद राय बरेलवी की मदद की और मुसलमानों की दरमियाँ तफ़्रीक व इन्तेशार की इस भड़कती आग को बरकरार रखने की गर्ज़ से किताब के मुफ्त नुस्खे तक़सीम किये

इस किताब के अलावा इस्माईल देहेलवी ने कई किताबें सिराते मुस्तकीम, ईज़ा उल हक़, रिसाला यक रोज़ा वगैरह तस्नीफ की हैं। अपनी किताबों में खुदा व रसूल की शान में बहुत ज़्यादा गुस्ताखियाँ की हैं। बतौर दलील चंद मिसालें :
अल्लाह तआला को ज़मान व मकान और जिहत से पाक मानना (या करार देना) और बगैर जिहत और मुहाज़ात के अल्लाह तआला की रूयत को साबित करना ये सारी बातें बिदअते हक़ीकह से हैं। (ईज़ा उल हक)
अल्लाह तआला का झूठ बोलना मुमकिन है। (रिसाला यक रोज़ा •सफह – 145)

ये यक़ीन जान लेना चाहिए के हर मखलूक ख़्वाह छोटा हो या बड़ा अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है।
(तक़वीयतुल ईमान)

ईसमाईल देहलवी के मुतबईन हिंदुस्तान में दो फ़िरकों में बटे, एक फिरका अहले हदीस (गैर मुक्लिद) के नाम से मौसूम हुआ जो अक़ाईद में वहाबिया ए नज्द और वहाबिया ए हिंद का हमनवा है, जिसके अहम पेशवा में नज़ीर हुसैन देहलवी , सिद्दीक हसन भोपाली और नवाब वहिदुज़ ज़मा वगैरह हैं और दूसरा फिरका देओबंदी कहलाया जो के मदरसा देओबंद की तरफ मंसूब है। तक़वीयतुल ईमान की तालीमात को कुबूल करता है और इमामे आज़म का मुक़ल्लिद और तसव्वुफ़ व तरीकत में सिलसिला ए क़ादरिया, चिशतिया , नक्शबंदिया वगैरह की तरफ अपनी निसबत ज़ाहिर करता है। इस फिरके के अहम सरगनों में अशरफ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, खलील अहमद अंबेठी, कासिम नानौतवी वगैरह शामिल हैं।
इनके अकाइद सरासर इस्लामी तालीमात के खिलाफ हैं बतौर मिसाल चंद अकाइद मुलाहज़ा फरमायें **हुज़ूर ﷺके बाद नये नबी के आने का इमकान** " अगर बिल्फर्ज़ बाद ज़माना ए नबी ﷺभी कोई नबी पैदा हुआ तो फिर खातमियत ए मुहम्मदी में कुछ फरक न आयेगा " (तहज़ीरून नास)
महमूद हसन देओबंदी के नज़दीक अल्लाह तआला तमाम क़बाएह और बुराइयों पर क़ादिर है। (जुहद उल मुक़्ल)

रसूलअल्लाह ﷺके इल्म को हैवानात व बहा'इम के इल्म से तशबीह देना:
" उस ग़ैब से मुराद बाज़ ग़ैब है या के कुल ग़ैब, अगर बाज़ ग़ैब मुराद हैं तो उसमें हुज़ूर ही की क्या तखसीस है। ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है " (हिफ्ज़ उल ईमान)
इस तरह के बेशुमार उल्मा ए देओबंद के हफ़वात हैं जिनके रद्दे बलीग में अहले सुन्नत व जमाअत की अनगिनत किताबें मंज़रे आम पर आईं, पर खुद दुष्नाम तराज़ और मलऊन ए बारगाह मुसन्निफीन तौबा व रुजु करने से इनकार करते रहे और आज तक उनके मुत्तबेईन अपने अस्लाफ के बातिल नज़रयात को सीने से लगाए हुए हैं। तौफीके तौबा नसीब न हो सकी इल्ला मा शा अल्लाह ।

इन मज़कूरह दो फिरकों के अलावा और भी बहुत से गुमराह कई जमाअतें सरज़मींने हिंद पर वुजूद में आईं मसलन कादयानी जिसका बानी मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी है, उसने नबुव्वत का दावा किया, अंबिया ए इकराम अलैह सलाम की इज़्ज़त पर हमला किया और सय्यदना ईसा अलैह सलाम की तौहीन की।
वो लिखता है के :
"खुदा ए तआला ने बराहीन अहमदिया में इस आजिज़ का नाम उम्मती भी रखा और नबी भी।
(इज़ालातुल औहाम)

वो आयात जो नबी के हक़ में नाज़िल हुई थीं उनको अपनी ज़ात पर चस्पा करते हुए दावा किया उससे मुराद मेरी ही ज़ात है।

" مبشرا برسول يأتي من بعدي اسمه أحمد "

"وما أرسلناك إلا رحمة للعالمين"

यानी मैं बशारत देता हूँ उस रसूल की जो मेरे बाद तशरीफ लाने वाले हैं जिनका नाम अहमद है और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहाँ के लिए (अंजाम अथम)

क़ुरान भद्दी गालियों से भरा हुआ है उसके कलाम में सख्ती का रास्ता अपनाया गया है
(इज़ाला तुल औहाम)

इसी तरह एक फिरका नेचरया है, सर सय्यद अहमद खान उसका मूजिद हैं उसने ज़माने की हर चीज़ को नेचर (फ़ितरत) से जोड़ा, जन्नत व दोज़ख और आसमान के वुजूद का इनकार किया, इस्लाम व लमज़हबीयत को एक नाम दिया और अल्लाह की ज़ात पर भी ईमान न रखने वाले को मुसलमान करार दिया और तमाम कुत्ब अहादीस को लायक ए ऐतबार न समझा।

(अज़ मुस्तफाद : फ़ितनो का ज़हूर)

इन फिरकों के अकाइद व नज़रयात से बहुस्ने बा खूबी ये नतीजा अखज़ किया जा सकता है के फिरका ए नाजिया वही है जो तालीमाते क़ुरान व अहादीस पर अमल पैरा है जिनपर सवादे आज़म का इतलाक़ होता है, और वो फिरका अहले सुन्नत व जमाअत है जो हुज़ूर ﷺके बताए हुए तरीके पर चलने वाले सहाबा ए इकराम और खुलफ़ा ए राशेदीन को अपना आइडियल मानते हैं। वो फिरका है जिनपर

"ما أنا عليه وأصحابي"

(फिरका ए नाजिया के बाबत में फ़रमाया) जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीके पर होंगे, का इतलाक होता है। या वो फिरका है जिसने किताबुल्लाह और सुन्नत ए रसूल को अपनाकर हुज़ूर ﷺके उस फरमाने आली शान के बामूजिब गुमराह होने से महफ़ूज़ रहा है के सरकार ने फ़रमाया :

" تركت فيكم شيئين لن تضلوا بعدهما ما تمسكتم بهما كتاب الله وسنتي. "

मैंने तुम्हारे दरमियान दो चीजें छोड़ी हैं जब तक उन दोनों को पकड़े रहोगे तो तुम गुमराही से महफ़ूज़ रहोगे और वो दोनो : अल्लाह की किताब और मेरी सुननत है।

लिहाज़ा तिफरकाबाज़ी, इख़्तिलाफ व तनाज़ा पैदा करना, आपसी इस्लामी मुहब्बत व मवद्दत की पाकीज़ा फ़िज़ा को मस्मूम करना, मन्हजे अस्लाफ पर शब खून मारना, सुन्नियों को बात बात पर मुशरिक व बिदअती कहना वगैरह सही उल अक़ीदह सुन्नी का शेवह व मन्हज नहीं बल्कि तालीमाते नबविया से बर्गश्ता होने वाले तमाम फिरकों के उलामा व मुत्तबेईन का है लिहाज़ा उन्हें खुद इस गुमराहना लिबास को उतार फेंक कर खैर ए उम्मत के मुखातिब का सही मिस्दाक़ अपने आप को ठहराने की ज़रूरत है। अल्लाह हम सबका ईमान पर खात्मा बिल खैर फरमाये और सवादे आज़म पर चलने की तौफीक बख्शे आमीन

म्युज़िक (गाना) और आख़िरत की बरबादी

:मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

मुस्लिम मुआशरा जिन बुराइयों में मुब्तिला है उस में एक नाम म्युज़िक यानी गानों बाजों का भी आता है खास तौर से नौजवान नस्ल इसमें ज़्यादा मुलव्विस है उसमें भी दो तबके हैं एक वो जिसे सिर्फ म्युज़िक सुनने का शौक है और अपनी नफ़सानी ख्वाहिशात को वो मोबाइल, टी वी, के ज़रिये पूरा कर लेता है और दूसरा वो जो खुद इन बुराइयों को जनम देता है, और उन्हें सिंगर और म्युज़ीशियन कहा जाता है उन्हें तमाम तरह के आलात ए मौसिकी का इस्तेमाल करना भी आता है उनका ज़रिया ए मुआश भी यही होता है। इंदश शरा ये तबका पहले तबके से ज़्यादा बड़ा मुजरिम है क्योंकि किसी बुरी चीज को ईजाद करने वाले का गुनाह उस बुरी चीज़ पर अमल करने वालों से ज़्यादा होता है।

हमें तो मशहूर होना है :
जब उनसे कहा जाए के ये पेशा तुमने क्यों इख़्तियार किया ये तो नाजायज़ व हराम है, तो कहते हैं हमें मशहूर होना है हमें अपना टैलेंट दुनिया को दिखाना है हमारे सामने शरीयत की बात न करो शरीयत पर चले तो हम कुछ नहीं कर पाएंगे अल्लाहु अकबर! ऐसे ऐसे जुमले बोलते हैं जो ईमान का जनाज़ा निकाल दें।

क्या ज़माना आ गया मशहूर होने के लिए हराम कामों का सहारा लिया जा रहा है बेहयाई को आम किया जा रहा है और ये लोग तो जहन्नुम में जाने का काम कर ही रहे हैं और दूसरे की तबाही का बाईस बन रहे हैं जबके अल्लाह तआला फरमाता है :

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ

तर्जुमा : नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती पर बाहम मदद न दो
लेकिन आज उसका बरअक्स नज़र आ रहा है लोग गुनाह और ज़्यादती पर एक दूसरे की मदद करते नज़र आ रहे हैं।
ऐसा ही हाल म्युज़िक सुनने सुनाने वालों का है अल्लाह तआला क़ुरान मजीद में फरमाता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ

तर्जुमा : और कुछ लोग वो हैं जो खेल की बात खरीदते हैं।

लहव ए हदीस से मुराद क्या है?
तफ़सीर इब्ने कसीर में है

लहव ए हदीस गाना बजाना है और मज़ामीर का इस्तेमाल करना है ये सहाबा, ताबेईन इसका माएने गिना से कर रहे हैं के अल्लाह तआला उन लोगों की मज़म्मत करता है जो गाना गाते हैं साज़ बजाते हैं मुख्तलिफ किस्म के आलात ए मौसिकी इस्तेमाल करते हुए म्युज़िक का धंदा करते हैं।

ये अजिल्ला सहाबा का कौल है इससे आप अंदाज़ा लगा सकते हैं के गाना बजाना, तरह तरह के आलात ए मौसिकी को इस्तेमाल करना कितना बड़ा गुनाह है आज दुनिया में करोड़ों डॉलर सिर्फ म्युज़िक के लिए खर्च हो रहे हैं आज जो म्युज़िक का धंदा कर रहे हैं ये सब नसर बिन हारिस के वारिस हैं ये वही नदर बिन हारिस है जो हुज़ूर ﷺके लाए हुए दीने हक़ के खिलाफ साज़िशें करता था और उसने कुछ नौजवान लड़कियाँ खरीद कर उन्हें गाना गाने और रक्स करने के लिए मुकर्रर कर

रखा था ये उसकी मंसूबाबंदी थी के किसी तरह मुसलमानों के दिलों से नूरे ईमान सलब कर लिया जाए बताओ ये कितनी बड़ी इस्लाम के खिलाफ़ साज़िश थी आज का दौर इससे भी ज़्यादा खतरनाक है आज म्युज़िक क्लब में क्या नहीं हो रहा है?

औरतों की इस्मतदरी , शराब, जुआ सब कुछ, म्युज़िक क्लब में म्युज़िक की ताल पर ररक्स होता है, शराब पी जाती है मर्द व औरत का इख़्तिलात होता है म्युज़िक भी उनके लिए नशे का काम करता है और कहानी ज़िना पर ख़तम हो जाती है ।

सलतनते इस्लामी का दावा करने वाला और खुदको तौहीद परस्त कहने वाला वो सऊदी प्रिंस जिसने अरब जैसी मुकद्दस सरज़मीन में सिनेमा घरों को खोलकर आईने इस्लाम से गद्दारी की है और साथ साथ वहाँ म्युज़िक कॉन्सर्ट हो रहे हैं, बड़ी बड़ी रक्स की मेहफ़िले सज रही हैं मतलब साफ है के यहूदी अपने मकासिद में पूरे कामयाब होते नज़र आ रहे हैं ।

बिला वजह तो नहीं हैं चमन की तबाहियाँ
कुछ बागबां हैं बर्क ओ शरर से मिले हुए।

डांस क्लासेज :
ये भी एक बहुत बड़ा फितना है आज लड़को की बात तो दरकिनार वालदैन अपनी नौजवान बच्चियों को डांस क्लासेज में भेज रहे हैं डांस क्लासेज में नौजवान लड़के और लड़कियों का इख़्तिलात होता है और उसके अंदर की कहानी माँ बाप को पता चल जाए के बेहयाई के नाम पर क्या क्या होता है? तो कभी अपनी बच्चियों को वहाँ भेजने का नाम भी न लें
जिस लड़की को इस्लाम पर्दा करने का हुक्म दे रहा है और नज़रें नीची रखने का हुक्म दे रहा है तो उसके लिए ये कैसे जायज़ हो जायेगा के वो मजमा ए आम के सामने नीम बराहना कपड़ों में म्युज़िक की ताल पर रक्स करे ।

और जब उन वालिदैन से कहा जाए ये तो शरीयत के खिलाफ है ये तो हराम है तो आगे से कहते हैं के इस ज़माने में शरीयत की बात न करो हमारी बच्ची में टैलेंट है अपना टैलेंट लोगों के सामने पेश कर रही है फिर वही लड़की अगर किसी लड़के के साथ फ़रार हो जाए तो यही वालिदैन हाथ मलते नज़र आते हैं कहते हैं के काश हमने अपनी बच्ची को उन बुरे कामों से रोककर रखा होता झूठी शौहरत के खातिर माँ बाप की इज़्ज़त तार तार होकर रह जाती है।
इस्लाम ही वो प्यारा मज़हब है जो औरत को इज़्ज़त देता है जीने का सलीक़ा अता करता है।

जो भी म्युज़िक सुनता है या म्युज़िक पर डांस करता है या म्युज़िक की मेहफ़िलें सजाता है शादी के नाम पर अपनी बहन बेटियों को लोगों के सामने नचाता है उसे अल्लाह तआला से तौबा करना चाहिए।

नबी की नात सुनें :
अगर आपको कुछ सुनने का शौक है तो इस्लाम तो आपको आसानी फ़राहिम कर रहा है आप हम्दे बारी तआला सुन सकते हैं जिससे आपका दिल नूरे तौहीद से जगमगा उठेगा और नबी पाक ﷺके प्यारे प्यारे औसाफ नात की शकल में आप समाअत फरमाएँ जिससे आपके दिल को सुकून मयस्सर होगा और इश्क़े रसूल ﷺमें भी इज़ाफा होगा मगर याद रहे के हम्द व नात व मनकबत सुनना वही जायज़ है जिसमे म्युज़िक न हो जिसमे की आलात ए मौसिकी ढोल बाजे न हों।

गाने सुनने वालों के लिए बईदें :

1) रसूले अकरम ﷺने फ़रमाया : जो आदमी गाना गाना चाहे (अगरचे म्युज़िक साथ न हो) तो अल्लाह तआला उसके दोनों कंधों पर एक शैतान बिठा देता है
(الجامع الاحکام القرآن تفسیر قرطبی ، سورۃ اللقمان)
बताइये कितना मनहूस है वो आदमी जिसके कंधे पर शैतान बैठा हो।

2) जो शख्श किसी गुलुकारा के पास बैठता है उससे गाना सुनता है तो कयामत के दिन उसके कानों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।
(बुखारी शरीफ)

3) अगर इंसान का पेट पीप से भर जाए ये उससे बेहतर है के उसके दिल में कोई गाना मौजूद हो।
(मुस्लिम शरीफ)

4) जिस तरह पानी लगाने से खेती पैदा होती है उसी तरह गाना दिल में निफ़ाक़ को पैदा करता है ।
(शईबुल ईमान)

गाना बजाना क़यामत की निशानियों में से एक निशानी :
रसूले अकरम ﷺने फ़रमाया इस उम्मत में खसफ भी होगा मसख भी होगा और क़ज़फ़ भी होगा।
खसफ का मतलब है बस्तियाँ धँस जायेंगी लोग रात को सोयेंगे सुबह को बस्तियाँ मिट चुकी होंगी।
मसख का मतलब है चेहरे बदल चुके होंगे सोयेंगे तो इंसान होंगे उठेंगे तो मआज़ अल्लाह खिनज़ीर या बंदर बन चुके होंगे।
क़ज़फ़ का मतलब है के आसमान से पत्थरों की बारिश होगी हर तरफ से पत्थर बरसना शुरू हो जायेंगे लोग ज़ख़्मी हो जायेंगे।

एक सहाबी ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह ﷺऐसा कब होगा?
आप ﷺने फ़रमाया : जब मुआशरे में कंजरियाँ (तवाइफ) पैदा हो जायेंगी और मुआशरे की बड़ी तादाद गुलुकारा औरतों की बन जायेगी और आलात ए मौसिकी आम हो जायेंगे और शराबें पी जायेंगी
(तिर्मिज़ी शरीफ)

आज यही हाल है हमें तौबा करना चाहिए अल्लाह तबारक व तआला से, अभी पानी सर से नहीं उतरा है।

गाने से बचने वालों के लिए इनआम :
जिन लोगोँ ने अपने आपको इन हराम कामों से बचाया होगा कल क़यामत के दिन अल्लाह तआला निदा फरमाएगा मेरे बंदे कहाँ हैं जिन्होंने दुनिया में अपनी जानों को और अपने कानों को गाने बजाने से बचा के रखा था , फरिश्ते कहेंगे या अल्लाह! ये सामने मौजूद हैं। अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा : इन सबको कस्तूरी के बाग़ात में दाखिल करदो उनको खबर दो मैंने उनपर अपने रिज़वान को हलाल कर दिया है और ए फ़रिश्तों! उनको मेरी तस्बीह सुनाओ।
(الجامع الاحکام القرآن تفسیر قرطبی ، سورۃ اللقمان)

ये इनआम किसके लिए है? उसके लिए जिसने अपने कानों को आलात ए मौसिकी से बचाया होगा जिसने गाना सुनने से परहेज़ किया होगा और उन बुरे कामों से लोगो को रोका होगा।
अल्लाह तआला हमें अमल की तौफीक अता फरमाए अल्लाह हमारा हामी ओ नासिर हो।

लादीनियत एक अज़ीम फितना

:फरदीन अहमद खान रज़वी साहब

الحمد لله الذي خلق السماوات والأرض وما بينهما وعنده علم الساعة وإليه ترجعون و الصلوة و السلام على حبيبه و رسوله و خير خلقه سيدنا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين اما بعد

فأعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

[١]إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

صدق الله العظيم

इस्लाम वो मज़हब ए मुहज़्ज़ब है जिसे किसी भी जिहत से देखा जाए तो वो बा कमाल नज़र आता है। गोया के उसकी मिसाल उस समर ए बार, सब्ज़ व शादाद दरख़्त की है जिसकी जड़ें मज़बूत और मुस्तहकम हैं और उसकी शाखें बोसा ए आसमान लेती हैं , उसकी अनोखी रंगत माह व मेहर को शरमाती है और उसके समरात से बहर व बर की खुदाई लुत्फ़ अन्दोज़ होती है। कहते हैं के जिस पेड़ पर ज़्यादा फल होते हैं वही ज़्यादा पत्थरों का निशाना बनता है। यही मिसाल दीने इस्लाम की है के जब ये एक नन्ही सी कोपल ही था तभी से उस पर हरीफों ने पत्थर बरसाना शुरू कर दिए थे तो सोचिये आज जबके ये हमारे सामने एक तनावर दरख़्त की शकल में मौजूद है तो उस पर किस क़दर संगबारी की जा रही होगी! इस मकाले में हम कोशिश करेंगे की अपने बिरादराने मिल्लत के लिए एक अज़ीम फितना यानी लादीनियत जो इस्लाम के खिलाफ शरअंगेज़ी करने और क़ुलूब व अज़हान को उससे मुतनफ्फर करने पर डटा हुआ है उसका सही ख़द्द ओ खाल उजागर करें ताके हम इससे बच सकें व सीना सिपर होकर इसका मुकाबला कर सकें।

मुख्तसर तारीख ए लादीनियत:

लादीनियत के अव्वलीन नुकूश को छठी सदी कब्ल मसीह (6 BCE) तक खींचा जा सकता है जहाँ हिनदुस्तान में जब जैन, बौद्ध, दीगर हिंदू मज़हब की शाखों की और चीन में टाओ अफकार की बुनियाद रखी गयी। ये लोग किसी तरह के नज़रया ए इलाह के कायल नहीं थे और न ही किसी तरह के मज़हबी रस्मो रिवाज का उनमे चलन था। इसी तरह यूरोप व अफ़्रीका में बाज़ कबाइल ऐसे मिले हैं जो किसी तरह के मज़हब की पैरवी नहीं करते थे यहाँ तक के अपने मुर्दों को बग़ैर किसी रसम के दफ़ना दिया करते थे।

यूरोपी और इतालवी (European and Italian) नशअते सानिया (Renaissance) के आगाज़ से ही मज़हब पर तनकीद शुरू हो गई थी लेकिन लादीनियत को इससे कुछ खास फ़ायदा नहीं था यहाँ तक के कराईन से पता चलता है के सोलहवीं सदी ईस्वी (16th Century AD) में लफ्ज़ (Atheist) यानी मुलहिद बतौर गाली इस्तेमाल होता था और कोई अपने आपको ये नहीं कहलवाना चाहता था ।

अठारवीं सदी ईस्वी में ज़ाँ ज़ाक रूसो ने ईसाई नज़रया ए इलाह को हदफ ए तनकीद बनाया इसी तरह वॉल्टियर को भी ईसाइयत के खिलाफ़ लिखने और ईसाई नज़रया ए इलाह से लोगों को मुतनफ्फर करने का मोइद माना जाता है।

डेविड ह्योम ने उसी अस्रा में छेह जिल्दों पर मुश्तमिल बर्तानिया की तारीख लिखी जिसमे उसने कहीं किसी तरह भी किसी इलाह का ज़िक्र नहीं किया और वो ये मानता था के अगर कोई गॉड है भी तो वो बर्तानवी उरूज के सामने बेबस और महज़ एक तमाशाई है।

उन्नीसवी और बीसवीं सदी ईस्वी में लादीनियत को काफी फरोग हासिल हुआ चूँके इस दौर में अक्सर मशहूर फिलॉस्फर पैदा हुए जिन्होंने मज़हब पर शदीद तनकीदें कीं। ज़्यादा तर इस दौर के फ़लसफ़ियों ने मज़हब को ईसाइयत की ऐनक से देखा और मौजूदा ईसाइयत की खामियों को तमाम मज़ाहिब की खामी समझा। उन्नीसवी सदी में शोपन हॉवर, फ्रेडरिक नत्शे या नीत्शे, कार्ल मार्कस जैसे फलसफी आए जिनके फलसफे और कलमी कारनामे तो बहुत मशहूर हुए लेकिन ये सब लादीन थे और इसी लिए इन्होंने लादीनियत को ही फरोग दिया। मसलन नीत्शे का कहना के " खुदा मर चुका है, हमने उसे मार दिया है " या मार्कस का कहना " मज़हब आवाम की आफियून है " ये तमाम मिसालें इसी बात की खुली दलीलें हैं के मज़हब के खिलाफ बकाईदा एक मुनज़्ज़म तहरीक उस दौर में चलाई गई जिसके नताइज आज तक नज़र आ रहे हैं।

लादीनियत से मुतालिक शुमारयाती आदाद:
दुनिया भर में अगर देखा जाए तो इस वक़्त दीगर मज़ाहिब से लोग रोज़ बरोज़ दूर होते जा रहे हैं। जिसकी साफ व वाजेह वजह ये है के लादीनियत के पैरोकारों के उठाये गए ऐतराज़ात का जवाब देने में वो कासिर रहे। आज़ाद खयाली और नई रौशनी के अफकार को सियासी तौर पर फरोग दिया गया। उसके साथ इस नज़रये को भी खूब खूब आम किया गया के " दीन सियासत से अलग है " जिसे यूरोप में कलीसा व हुकूमत को अलग करने में इस्तेमाल किया गया। दीगर मुमालिक में सेकुलर स्टेट कायम किये गए और एक मुल्की मज़हब की सोच को हदम करने की पूरी कोशिश की गई। नतीजा आपके सामने है : अमेरिका में ईसाई आबादी की तादाद 8.2 फीसद गिर गई यानी इतने फीसद लोग 2007 से 2014 के बीच में लादीन या मुलहिद हो गए। पूरे आलम में लादीन या मुलहिद आबादी कम अज़ कम 450 से 500 मिलियन है, इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है की दुनिया भर में पापाओं, रब्बियों, आचार्यों, बौद्ध मनकों ने किस क़दर ऐश पसंदी से काम लिया है के रोज़ बरोज़ मुलहिदों में इज़ाफ़ा हो रहा है और वो अपने घरों में महवे ख़्वाब हैं।

आखिर दीगर मज़ाहिब अपना दिफ़ा करने में नाकाम क्यों?
किसी भी मज़हब की बुनियाद उसका नज़रया ए इलाह, पैगंबर की हयात, और उसका निज़ामे अमल होता है। अगर दीगर मज़ाहिबे आलम का जाइज़ा लिया जाए तो इस कसौटी पर वो खरे नहीं उतरे। ईसाइयत को ही ले लें, नज़रया ए इलाह का फसाना फ़कत इतना है के " तीन एक हैं और एक तीन हैं " जिसका मुलहिद कलमकारों ने खूब मज़ाक उड़ाया है के न तो ये रियाज़ी से साबित होता है और न अल्जेबरा से। पैगंबर की हयात का जाइज़ा लें तो ईसाई मज़हब में हज़रत ईसा अलैह सलाम की कोई सवानेह हयात उनकी जिंदगी के हर गोशे पर रौशनी नहीं डालती जिससे किसी निज़ाम को तश्कील दिया जा सके।

निज़ाम ए अमल की बात करें तो फ़कत इतना है के दुनिया भर के गुनाह करके सिर्फ इतवार को कलीसा में हाज़री लगा दें आपकी बख्शिश हो जायेगी और अगर ये भी मुमकिन नहीं तो जाएं वैसे भी आपके मसीहा ने कुर्बानी देकर आपके तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है। मआज़अल्लाह दूसरी सिम्त देखें तो एक मज़हब है जहाँ बुतपरस्ती आम है। इसे इतने औहाम व खुराफ़ात से ढाँप दिया गया है के असल ख़द्द ओ खाल मालूम करना मुश्किल, वहीं यही मज़हब मुआशरे को तबकात में मुनक़सिम करता है और किसी को ऊंचा और किसी को नीचा बताता है। इस बात को लेकर भी मुलहिदों ने खूब खिल्ली उड़ाई । असनाम तो असनाम, आग, पानी, जानवरों बल्कि आदमियों के आला ए तनासुल की भी परस्तिश हो रही है! ये सब मलहदों के हौसले बुलंद करता है और ये दिखाकर वो आराम से कहते हैं के " मज़हब तो बेबकूफों का शुगल है " कहीं रहबानियत का ये मतलब है के घर बार छोड़ दो , अपनी ज़िम्मेदारियां तर्क कर दो और जंगलों में निकल जाओ। जहाँ औरत को महज़ एक ऐश व इशरत के सामान का दर्जा दिया गया है जिसे तर्क करना राहिब बनने के लिए ज़रूरी है।

जहाँ ये तसव्वुर दिया गया के अगर खुदा को पाना चाहते हो तो औरतों से दूर रहो, शादी को शजरे ममनूआ समझो।

इस्लाम की इंफिरादियत और इलहाद का खात्मा:
कितना ही दुनिया में इलहाद व लादीनियत को आम करने की कोशिश की गई, कितनी ही मुनज़्ज़म तहरीकें चलाई गयीं। मगर क्या खूब एक शायर ने कहा है? :

लंबी है गम की शाम मगर शाम ही तो है

दुनिया में वाहिद एक ऐसा मज़हब इस्लाम है जिसने न सिर्फ ये के इलहाद से टक्कर ली बल्कि उसके उठाये तमाम शुकूक ओ शुबहात का बेहतरीन और तशफ्फी बख्श जवाब भी दिया है। इस्लाम वो मज़हब है जो औहाम व खुराफ़ात से पाक है , जहाँ मखलूक की नहीं बल्कि खालिक की परसतिश की जाती है। इसका नज़रया ए इलाह महफ़ूज़ भी है माकूल भी है और नकाबिले तर्दीद भी है। अक्ल भी इस नज़रया ए तौहीद को कुबूल करती है। के हमारा खुदा एक है, और वो मखलूक के जैसा नहीं है, और न कोई शै उसके जैसी है, वो अदल व इंसाफ करने वाला है, सब पर गालिब है, सबका पालने वाला है, वो रहमान व रहीम भी है, और कह'हार व जब्बार भी है और उसके सिवा कोई इस लायक नहीं के उसकी इबादत की जाए। अगर पैगंबर की ज़िंदगी पर नज़र डालें तो उनकी पैदाइश से लेकर ज़ाहिरी वफ़ात तक की तफ़्सील क़ुतुब ए अहादीस में दर्ज है, सैकड़ों सीरत उन नबी की किताबें मौजूद हैं । उनके शमाइल, फ़ज़ाइल, महामिद, आदात व अतवार, उनकी गुफ़्तार व रफ्तार, उनका अमन व तलवार, उनकी हयात व किरदार, सब कुछ हक़ा'इक व मआरिफ़ की रौशनी में है कोई इबहाम नहीं कोई औहाम नहीं बल्कि सिर्फ हक़ का उजाला।
निज़ाम ए अमल की अगर बात करें तो क़ुरान , हदीस और उन्ही की अहकाम की वज़ाहत करता फ़िक़्हा हमारे सामने मौजूद है। क़ुरान पाक को अल्लाह ने तग़य्युर व तब्दील से महफ़ूज़ रखा, अहादीस ए मुबारक की इस्नाद का फन वुजूद में आया और मुहद्दिसीन की काविशों से सही हदीसें हज़ार जाँच फटक के बाद हम तक पहुँची, और फुक़्हा ए इस्लाम ने हमारे लिए उनकी मुरादों को वाज़ेह कर दिया।

इस तरह से दीन बगैर किसी बैरूनी आमेज़िश के हम तक पहुंचा। जब फल्सफियों ने इस पर हमला किया तो इमाम अबुल हसन अश'अरी व इमाम अबु मंसूर मातरूदी रेहेमाहुमुल्लाह जैसे जाँबाज़ सामने आ गए और दीन का दिफ़ा किया फिर जब अक्ल परस्ती का दौर आया तो इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी और इमाम हुज्जतुल इस्लाम ग़ज़ालि रेहेमाहुमुल्लाह जैसे उसूली माहेरीन ने कलमी जिहाद किया। इसी तरह आज तक हमारे उलामा व फुज़्ला ने इलहाद व लादीनियत का डट कर मुकाबला किया है और उसे शिकश्ते फ़ाश दी है। और ये दीन हमेशा गालिब क्यों न रहे, ये तो आया ही क़यामत तक के लिए है जिसकी हिफाजत का ज़िम्मा खुद खालिके कौनो मकां ने उठा रखा है।

नतीजा ए कलाम:
अल हासिल ये के तमाम आसार व कराईन, हका'अक व मआरिफ़ की रौशनी में तहकीक ये बताती है के दुनिया में अगरचे इलहाद व लादीनियत तेज़ी से बड़ रही है और इसे सियासी हिमायत भी मिली हुई है मगर तमाम आलम में मज़हब ए इस्लाम ही इसका मुकाबला करने की ताकत व जुर्रत रखता है और हमेशा यही गालिब और उसके पैरोकार ही कामयाब व कामरान रहेंगे। इसी पर अपनी गुफ्तगू ख़त्म करना चाहूँगा, अल्लाह हम सबको इस्लाम पर सख्ती से अमल करने की तौफीक आता फरमाये।

آمين يارب العالمين بجاه النبي الأمين عليه افضل الصلاة و أكرم التسليم

मसादिर व मराजेअ

1.Al Quran
2.Online version: Durant, Will, 1885-1981. Story of civilization. New York, Simon and Schuster, 1935- (OCoLC)558433968

3.Hecht, Jennifer Michael (2004). Doubt: A History. HarperOne. pp. 325, ISBN 0-06-009795-7

4.Geoffrey Blainey; A Short History of Christianity; Viking; 2011; pp.390–391

5. Karl, Marx (February 1844). "A Contribution to the Critique of Hegel's Philosophy of Right". Deutsch-Französische Jahrbücher. Retrieved 24 July 2009.

6.MLANietzsche, Friedrich Wilhelm, 1844-1900. The Gay Science; with a Prelude in Rhymes and an Appendix of Songs. New York :Vintage Books, 1974.

7.BBC News | The decline of religion in the West - https://www.bbc.com/news/world-33256561

8.Keysar, Ariela; Navarro-Rivera, Juhem (2017). "36. A World of Atheism: Global Demographics". In Bullivant, Stephen; Ruse, Michael (eds.). The Oxford Handbook of Atheism. Oxford University Press. ISBN 978-0199644650

9. Al Quran
10. Al Quran
11. Al Quran
12. Al Quran
13. Al Quran
14. Al Quran
15. Al Quran
16. Al Quran
17. Sahih Bukhari

उल्मा को बुरा मत कहो

:मौलाना गुलाम मुस्तफा नईमी साहब

उल्मा ए इकराम की इज़्ज़त व अज़मत मोहताजे बयान नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाता है
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ *
"तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान, नसीहत तो वही मानते हैं जो अक़्ल वाले हैं।"
इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने इन्सानों को दो दर्जों में तक़सीम फ़रमाया है-

1) साहिबे इल्म यानी जाने वाले
2) इल्म से महरूम यानी न जानने वाले

दर्जा बन्दी के साथ ही अल्लाह तआला ने यह भी वाज़ेह फ़रमा दिया के दोनों में कोई बराबर नहीं है दोनो के माबैन ज़मीनो आसमान का फरक़ है।इस फ़रक़ को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान किया गया है।
न जानने वालों को उल्मा से रहनुमाई लेने का हुक्म दिया:

فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ
"तो ऐ लोगो! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।"

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल तहरीर फ़रमाते हैं: हदीस शरीफ़ में है बीमारी ए जाहिल की शिफ़ा उल्मा से दरियाफ़्त करना है लिहाज़ा उल्मा से दरियाफ़्त करो वह तुम्हें बता देंगे।

यानी इल्म न होना एक क़िस्म की बीमारी है और इसके मुआलिज व डॉ• उल्माए किराम हैं इसलिए ग़ैर आलिमों को हुक्म दिया गया के वह अपनी बीमारी का इलाज कराने उल्मा की बारगाहों में हाज़िर हों और उन से इल्म की बातें सीख कर अपनी बीमारी को दूर करें।
दूसरे मुक़ाम पर इन्सानों के माबैन अहले इल्म की फ़ज़ीलत व ख़ुसूसियत को इस तरह बयान किया गया है:

"**अल्लाह से उसके बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं बेशक अल्लाह बख़्शने वाला इज़्ज़त वाला है।**"
हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं:
[उल्मा] उस(अल्लाह) की सिफ़ात जानते हैं और उसकी अज़मत को पहचानते हैं, जितना इल्म ज़्यादा उतना ख़ौफ़ ज़्यादा। हज़रत इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया के मुराद यह है के मख़लूक़ में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ उस [आलिम] को है जो अल्लाह तआला के जबारूत और उसकी इज़्ज़त व शान से बाख़बर है।

"अल्लाह, फ़रिश्ते और अहले इल्म इस बात की गवाही देते हैं के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।"

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने साथ फ़रिश्तों और अहले इल्म का ज़िक्र फ़रमाया है। इमाम इज़ाफ़े फ़रमाते हैं के इस आयत में इल्म की फ़ज़ीलत और उल्मा की अज़मत का ज़िक्र है। अगर उल्मा से ज़्यादा कोई मोअज़्ज़ज़ होता तो उस का नाम भी फ़रिश्तों के साथ लिया जाता।
इसी तरह सूरह طٰہٰ में नबी करीम ﷺ को हुक्म दिया गया:

....

"और अर्ज़ करो ऐ मेरे रब! मुझे इल्म ज़्यादा दे।"

यानी इल्म इतनी अहमियत वाली चीज़ है के जिस में इज़ाफ़े की दुआ माँगने का हुक्म दिया गया। अगर इस से ज़्यादा अहमियत वाली कोई चीज़ होती तो उस के माँगने का हुक्म भी दिया जाता।

(कुर्तुबी)

आम तौर पर लोग इल्म और माल का तक़ाबुल करते हैं लेकिन अल्लाह तआला ने माल को "क़लील" यानी मामूली सी चीज़ क़रार दिया।

"तुम फ़रमाओ के दुनिया का साज़ व सामान बहुत थोड़ा है और अच्छी आख़िरत परहेज़ गारों के लिए है।"

एक तरफ़ दुनियावी माल व मताअ को मामूली और हक़ीर क़रार दिया गया तो इल्म को बाइसे बुज़ुरगी क़रार दिया गया।

अल्लाह तआला ने तमाम बन्दों में अहले इल्म को मुमताज़ बनाया, उन्हें इज़्ज़त व बुज़ुर्गी से नवाज़ा, उन्हें तमाम इन्सानों का मुक़्तदा व रहबर बनाया इसलिए अम्बिया ए इकराम ने अपनी उम्मतों की हिदायत व रहनुमाई के लिए इन्हीं उल्मा को विरासत ए अम्बिया का मक़ाम व मर्तबा भी हासिल हुआ, हुज़ूर अक़दस ﷺ फ़रमाते हैं:

"हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं:

मैं ने रसूल अल्लाह ﷺ से सुना जो इल्म ए दीन के लिए निकलता है अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है। बे शक फ़रिशते तालिब ए दीन के पाँव के नीचे पर बिछाते और अर्ज़ो समां की सारी मख़लूक़ हत्ता के समुन्दरों की मछलियां गहरे पानियों में उनके लिए इस्तिगफार करती हैं। आबिद पर आलिम की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे चौदहवीं के चाँद की सारे सितारों पर। उल्मा अम्बिया के वारिस होते हैं। याद रखो के अम्बिया का विरसा दिरहम व दीनार नहीं होता बल्कि इल्म ए दीन होता है जो जितना ज़्यादा हासिल करेगा उतनी ही फ़ज़ीलत हासिल कर सकेगा।"

इस हदीस में हुज़ूर सय्यदे आलम ﷺ ने अहले इल्म की कई शानें बयान फ़रमाई हैं:

1- उल्मा अम्बिया के वारिस होते हैं।

2- उल्मा ए किराम इबादत गुज़ारों पर आला दर्जे की फ़ज़ीलत रखते हैं।

3- इल्म की कसरत से बुज़ुर्गी में इज़ाफ़ा होता है।

4- अहले इल्म के लिए सारी कायनात दुआ करती है।

अम्बिया ए किराम का वारिस होना इतनी बड़ी फ़ज़ीलत है जिस के बाद किसी और फ़ज़ीलत की ज़रूरत ही नहीं है इस लिए हर दौर में उलमा ए किराम को नुमाया मुक़ाम हासिल रहा है।

उल्मा की ज़रूरत क्यों?

बाज़ दुनिया परस्त उल्मा की फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी और उन की अहमियत पर यह ऐतराज़ करते हैं: "इस्लाम में मुल्लाइयत नहीं है" ऐसे आज़ाद ख़्यालों के मुताबिक़ इस्लाम इतना सादा और आसान दीन है के उसे समझने और अमल करने के लिए किसी मौलवी की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है।

इस ऐतराज़ में आज़ाद ख़्याल कई मुआमलों को ख़ल्त मल्त कर के बात को उल्झा देते हैं और कट हुज्जती कर के बहस व मुबाहिसा करते हैं, आइए आसान अंदाज़ में इस ऐतराज़ का जवाब समझते हैं।

दीन आसान और क़ाबिल ए फ़हम है। दीन की बुनियादी बातें हर इन्सान के लिए बेहद आसान हैं लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं के मुकम्मल दीन को समझना हर कस व नाकिस के लिए आसान है। अगर दीन की जुमला बातों को ख़ुद से समझना इस क़दर आसान होता तो अल्लाह तआला हरगिज़ इल्म वालों से रहनुमाई हासिल करने का हुक्म नहीं देता, न अहले इल्म को अवाम पर बुज़ुर्गी का बयान किया जाता।

इस बात को इस तरह समझ लें के किसी भी मदरसे व स्कूल का सादा उसूल यह है के तालिब ए इल्म किताबें लेकर जाए और पढ़ाई करे।
इतनी सी बात को एक आम तालिब ए इल्म भी ख़ूब जानता है के किताबें लेकर जाना और पढ़ाई करना मदरसा व स्कूल का बुनियादी मक़सद है। इस बात को समझने के लिए किसी माहिर ए तालीम या प्रोफ़ेसर की ज़रूरत नहीं है लेकिन मदरसे व स्कूल में पहुँच कर ही मदरसे के क़याम का मक़सद पूरा नहीं हो जाता बल्कि मक़सद तब पूरा होगा जब तालिब ए इल्म किताबों को अच्छी तरह पढ़े और इल्म हासिल करे। लेकिन यह मरहला बग़ैर असातिज़ा की रहनुमाई के किसी क़ीमत हासिल नहीं हो सकता, किताब पास होने का मक़सद यह नहीं के आप ख़ुद से किताब समझ सकते हैं।
आप किताब को उसी वक़्त समझ सकते हैं जब असातिज़ा रहनुमाई करे। कई बार ऐसा होता है के तालिब ए इल्म ज़हीन होता है और जल्दी समझ जाता है तो बाज़ तल्बा कमज़ोर ज़हन के होते हैं, उन्हें उस्ताद की ख़ुसूसी तवज्जो की ज़रूरत होती है तब कहीं जाकर तालिब ए इल्म किताबों को समझ पाता है।ठीक उसी तरह दीन के बुनियादी उसूल बड़े सादा और आसान हैं उसे जानने समझने के लिए किसी माहिर ए दीन की ज़रूरत नहीं है लेकिन दीन को अच्छी तरह समझने के लिए आलिम दीन की ज़रूरत लाज़िम है।
मसलन अल्लाह तआला को एक मानना और हुज़ूर ﷺ को रसूल मानना दीन का बुनियादी अक़ीदा है इसे जानने के लिए किसी ख़ास मेहनत और फ़र्द की ज़रूरत नहीं है लेकिन "वहदानियत"(अल्लाह को एक मानने) की तफ़सील क्या है, किन बातों से शिर्क हो जाता है, वहदानियत के तहत कितनी बातों को जानना लाज़िम है। रिसालत का मतलब क्या है, किन बातों से अक़ीदा ए रिसालत में ख़राबी आ जाती है, यह वो बातें हैं जिन्हें एक आम शख़्स ख़ुद से हरगिज़ नहीं समझ सकता। उन्हें समझने के लिए किसी आलिम ए दीन की रहनुमाई बेहद ज़रूरी है।
जो लोग इस्लाम और मुल्लाइयत के ताने देते है उन के ज़हनों में शायद यह बात बैठी हुई है के उल्मा दीन के नाम पर अपनी ज़ाती राय देते हैं। ऐसा ख़्याल या दिमाग़ी ख़लल का नतीजा है या उल्मा से दूरी और तास्सुब का।
सही बात यह है के उल्मा तालीमात ए दीनिया के नाक़िल होते हैं जिस तरह एक उस्ताद जो भी पढ़ता है वह किताब से ही पढ़ता है, मुश्किल सबक़ को आसान करके समझता है ताकि सबक़ अच्छी तरह ज़हन नशीन हो जाए इसी तरह उल्माए किराम जो भी बताते हैं क़ुरान व हदीस से ही बताते हैं, जो बात मुश्किल होती है या अवाम के ज़हन में नहीं आती, उसका ख़ुलासा और मतलब आसान लफ़्ज़ों में बयान करते हैं ताकि लोग अच्छी तरह से दीन का सबक़ सीख जाएँ यह बात ज़रूरी है के बात दीन की होती लेकिन उल्मा अपने अल्फ़ाज़ और अंदाज़ में समझाते हैं ताकि लोगों के ज़हन में अच्छी तरह बात का मतलब आ जाए
दुनियवी नुक़्ता ए नज़र से भी देखा जाए तो हर इन्सान हर काम नहीं कर सकता, क्योंकि हर एक इन्सान अपने ही फ़ील्ड और काम में माहिर होता है, इस लिए दूसरे फ़न या फ़ील्ड की ज़रूरत पड़ती है तो लोग उसी फ़न और फ़ील्ड के माहिर से राब्ता करके उनके इल्म व महारत से फ़यदा उठाते हैं, हर जगह अपना दिमाग़ लड़ाने से बचते हैं। अब यहां सवाल उठता है के जिस तरह दुनियवी कामों के लिए अलग अलग माहेरीन की ज़रूरत पड़ती है इस तरह उल्मा का क़ौम के लिए होना ज़रूरी है या नहीं, अगर नहीं है तो इस का क़ायल होना पड़ेगा के फिर इस्लाम की तालीमात जानने की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि उल्मा के बग़ैर इस्लामी क़वानीन का जानना मुमकिन नहीं क्योंकि उल्मा ही इस फ़ील्ड के माहिर हैं और माहेरीन के बग़ैर अपनी राय पर अमल करना सरासर नादानी है क्योंकि कोई पेशा बग़ैर उसके माहेरीन के चल नहीं सकता। यह और बात के थोड़ी बहुत दीनी मालूमात सब को हो जाएं और उस से वह महदूद वक़्त तक कुछ ज़रूरत पूरी करें मगर उस से इस मुकम्मल ज़रूरत पूरी नहीं हो सकती। किसी चीज़ की तकमील हमेशा उस के माहेरीन से होती है तो माहेरीन उल्मा की रहनुमाई दीनी ज़रूरत बन जाती है। बदलते वक़्त में मुआशरे में भी ख़ासी तब्दीलियां आई हैं...अब डा॰ से लेकर इंजीनियर और वकील तक ज़्यादातर माहेरीन ए फ़न जहाँ अपनी कारकर्दगी की फ़ीस चार्ज करते हैं,

जिसे आसान ज़बान मे Advise fee कहा जाता है!! लोग कोई भी काम करने से पेश तर "क़ीमती मशवरा " देकर उस काम के माहिर से मिल कर राय लेते हैं!!
किसी ज़माने में फन्नी माहेरीन बग़र्ज़ ए ख़िदमत अपने तजुर्बात की रोशनी में लोगो को मश्वरा दिया करते थे... लेकिन आज "बदल ए ख़िदमत" न हो तो You can go please कह कर रास्ता दिखा दिया जाता है....शायद इसी लिए आज तक़रीबन हर मैदान में एडवाइज़र हज़रात की बरामदात हो रही है...अबतो आम लोग भी Advise fee देने के आदी हो गए हैं...कम अज़ कम डॉक्टरों को तो आम लोग भी मशवरा फ़ीस देने लगे हैं और दवाई मेडिकल स्टोर से ख़रीदते हैं...लेकिन
Advise fee के इस दौरे उरूज में भी ऐसे माहेरीन पाए जाते हैं जो अपने मशवरों की फ़ीस लेना तो कुजा माथे पर शिकन भी नहीं लाते....आप सोंच रहे होंगे के इस तिजारती दौर में ऐसा कौन माहिर ए फ़न है जो लोगों के मसाइल सुन कर अच्छी राय देता है, आख़िर वह माहिर ए फ़न कहाँ रहते हैं? मस्जिद व मदरसे में!!
जी आप ने बिल्कुल ठीक सुना...वह माहेरीन ए फ़न मसाजिद व मदारिस में ही रहते हैं जो तिजारती दौर में भी ख़ुलूस व वफ़ा का पैकर बनकर ख़िदमत क़ौम अंजाम देते हैं....यह वह माहेरीन ए फ़न हैं जो जहाँ होते हैं वहाँ अपने फ़न का फ़ैज़ान लुटाते किसी को कारोबारी मसाइल की शरयी बारीकियों से आगह करते हैं.... कहीं निकाह व तलाक के पुर पेच मसाइल को सुलझाते हैं.... किसी बस्ती में विरासत की उल्झी हुई डोर को सुलझाते हैं.... लेकिन बदल ए ख़िदमत के तौर पर किसी चीज़ के तालिब नहीं होते!!

उल्मा की क़द्र करो

जो लोग इल्मी विरासत के अमीन हैं और क़ौम की इल्मी ज़रूरत को पूरा करने में रोज़ व शब मसरूफ़ ए अमल हैं उन कि नाक़द्री करना और उन्हें बुरा कहना किस क़दर ख़ौफ़नाक है। इसे इल्मे दीन की मुहब्बत ही कहा जाएगा के वह दुनिया की रंगीनियां देख कर भी दुनिया की तरफ़ नहीं दौड़ते बल्कि दीनी ख़िदमत में लगे रहते हैं।
आज लोगों का Life standard बहुत ज़्यादा हाई-फ़ाई हो गया है मगर यह उल्मा ही की जमाअत है कि निहायत मामूली असबाब के साथ ज़िन्दगी बसर करते हुए लोगों के दीनी ज़रूरियात के लिए मौजूद रहते हैं। सुबह से शाम तक और शाम से अगली सुबह तक उल्मा की रोज़ मर्राह की ज़िन्दगी अवामी ज़रूरियात की तकमील में गुज़रती है। वह लोगों की आला तर्ज़ ज़िन्दगी को ख़ूब देखते हैं लेकिन फिर भी वो दीनी कामों में रहते हैं और दुनियादारी से ख़ुद को बचाते हैं। नाक़द्री ए उल्मा से बचना चाहिए अगर उल्मा आवामी तानों से तंग आकर दुनियवी कामों में लग गए तो दीनी ज़रूरतें कौन पूरी करेगा?
 जिन इलाक़ों में उल्मा की कमी है या बिल्कुल नहीं हैं वहां के मुसलमानों की दीनी हालत देखी जाए तो अफ़सोस होता है नाम से लेकर निकाह तक और बोल चाल तक में ग़ैरों के मज़ाहिब की छाप नज़र आती है इस लिए हमें उल्मा के वुजूद को ग़नीमत समझना चाहिए और उन की क़द्र करके दीनी ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए, उल्मा से मुहब्बत दीन व दुनिया की भलाई का ज़रिया है।

नमाज की अदायगी और नमाजियों की गलतियां

:मौलाना तारिक़ अनवर मिस्बाही साहब

कभी बे तवज्जही के सबब और कभी ला इलमी के सबब नमाज में कुछ ग़लतियां हो जाती हैं। बाज़ ग़लतियों के सबब नमाज फ़ासिद हो जाती है और बाज़ ग़लतियों के सबब नमाज़ मकरूह ए तहरीमी और बाज़ ग़लतियों की वजह से नमाज़ मकरूह तंज़ीही हो जाती है।

1) आजकल तस्वीरों का रिवाज आम होता जा रहा है लोग अपने घरों को मुख्तलिफ किस्म की तस्वीरों से सजाते हैं कपड़ों में भी तस्वीर बनी होती हैं बेजान की तस्वीर जायज़ है और जानदार की तस्वीर नाजायज़ है।
हजरत सदरुश्शरीया अलेह रहमा ने तस्वीर से मुताल्लिक़ तहरीर फ़रमाया जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहनकर नमाज पढ़ना मकरूह ए तहरीमी है। नमाज के अलावा भी ऐसा कपड़ा पहनना नाजायज़ है। यूं ही मुसल्ली के सर पर यानी छत में हो, या मुअल्लक़ हो या महल ए सुजूद में हो कि इस पर सजदा वाक़ेअ हो तो नमाज मकरुह ए तहरीमी होगी यूं ही मुसल्ली के आगे या दाहिने या बाएं तस्वीर का होना मकरूह ए तहरीमी है।

2) कभी लोग गिरजा घरों और मंदिरों में भी नमाज पढ़ते हैं चूंकि ग़ैर अल्लाह की इबादत जहां होती है वहां शैतान का अड्डा बन जाता है। इसलिए ऐसे मक़ामात में नमाज नहीं पढ़ना चाहिए।
हजरत सदरुश्शरया अलेह रहमा ने रकम फरमाया कुफ़्फार के इबादत ख़ानों में नमाज पढ़ना मकरूह है कि वह शयातीन की जगह हैं। और ज़ाहिर कराहत तहरीम(बहर) बल्कि उनमें जाना भी ममनूअ है।

3) रुकू में शामिल होने से क़ब्ल तकबीर ए तहरीमा कहना है, उसके बाद तकबीर कहकर रुकू में जाना है। उजलत पसंदी अच्छी चीज़ नहीं। अगर रुकू ना मिल सके तो एक रकअत पढ़ लेना कुछ मुश्किल नहीं।
हजरत सदरुश्शरीया अलेह रहमा ने रकम फरमाया जल्दी में सफ़ के पीछे ही से अल्लाहू अकबर कहकर शामिल हो गया फिर सफ़ में दाखिल हुआ यह मकरुह ए तहरीमी है।

4) अगर अच्छे कपड़े मौजूद हो तो काम काज के कपड़े पहन कर नमाज़ नहीं पढ़ना चाहिए जब हम किसी दोस्त की मुलाक़ात को जाते हैं तो उम्दह कपड़े ज़ेब ए तन करते हैं तो दरबार ए इलाही में हाज़िरी के वक़्त भी खुश लिबास का धयान होना चाहिए
हज़रत सदरुश्शरीया अलेह रहमा ने रक़म फ़रमाया काम काज के कपड़ों से नमाज़ पढ़ना मकरूह ए तंज़ीही है जब के उसके पास और कपड़े हों वरना कराहत नहीं

5) नमाज़ में लिबास भी दुरुस्त रखना चाहिए आज कल शर्ट को पैंट के अंदर कर दिया जाता है नमाज़ के वक़्त शर्ट को बाहर निकालने का हुक्म है इसी तरह आस्तीन और पैंट को मोड़ना भी मना है

हज़रत सदरुश्शरीया अलेह रहमा ने रक़म फ़रमाया: उल्टा कपड़ा पहन कर ओढ़ कर नमाज़ पढ़ना मकरूह है और ज़ाहिर तहरीम, यूँही अंगरखे के बंद न बांधना और अचकन वगैरह के बटन न लगाना ,अगर उसके नीचे कुरता वगैरह नहीं और सीना खुला रहा तो ज़ाहिर कराहत ए तहरीम है और नीचे कुरता वगैरह है तो मकरूह ए तंज़ीही

6) नमाज में कुरान मजीद की तिलावत होती है और अज़कार ए नमाज़ पढ़े जाते हैं। इन तमाम में हरूफ़ की अदायगी सही तौर पर होनी चाहिए, वरना बाज़ सूरतों में नमाज भी फ़ासिद हो जाती है। इसी तरह हरूफ़ की सिफ़ात पर तवज्जो देनी चाहिए। मकतब में कुरान शरीफ पढ़ने पढ़ाने के वक्त इन सब अमूर पर तवज्जो देनी चाहिए।

हजरत सदरुश्शरीया अलेह रहमा ने रक़म फ़रमाया "तकबीरात ए इंतक़ाल में" "अल्लाह" या "अकबर" के अलिफ़ को दराज़ किया " आल्लाह " या "आकबर" कहा ,या बे के बाद अलिफ़ बढ़ाया, अकबार कहा, नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। और तहरीमा में ऐसा हुआ तो नमाज़ शुरू ही न हुई। (दुर्रेमुख़्तार वगैरह)

क़िरात या अज़कार में ऐसी ग़लती जिससे माअनी फ़ासिद हो जाए नमाज़ को फ़ासिद कर देती है

तजवीद व आयत की ग़लतियां
नमाज़ हर दिन पाँच मरतबा अदा की जाती है। नमाज़ में आयात ए क़ुरानिया की तिलावत की जाती है। अगर क़ुरान न पढ़ा हो, या आयात ज़बानी याद न हो तो नमाज़ में क्या पढ़ेगा अगर आयात व सूरतें याद हैं, लेकिन हरुफ़ के मख़ारिज और सिफ़ात से नवाक़िफ़ है, तो यह भी एक बड़ा मामला है। अगर हरुफ़ की अदायगी में फ़साद के सबब माअनी फ़ासिद हो जाए तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। हरूफ़ की सिफ़ात की अदायगी का भी ख़्याल रहे। फ़िक़्ही मसाइल दरज ज़ेल हैं।

मसला:

ط ت،س ث ص،ذ زظ،ء ع،ه ح،ض ظ د

हरफ़ों में सहीह तौर पर इम्तियाज़ रखें, माअनी फ़ासिद होने की सूरत में नमाज़ न होगी, और बाज़ तो س ش،ز ج،ق ک में भी फ़रक़ नहीं करते।

मसला: एक हरुफ़ की जगह दूसरा हरुफ़ पढ़ना अगर इस वजह से है के उस की ज़बान से वह हरुफ़ अदा नहीं होता तो मजबूर है, उस पर कोशिश करना ज़रूरी है। अगर लापरवाही से है जैसे आज कल केअक्सर हुफ़्फ़ाज़ व उल्मा के अदा करने पर क़ादिर हैं, मगर बे ख़्याली में तब्दील ए हरुफ़ कर देते हैं तो अगर मआनी फ़ासिद हों, नमाज़ न हुई। इस क़िस्म की जितनी नमाज़ें पढ़ी हों, उनकी क़ज़ा लाज़िम है।

मसला: जिस से हरुफ़ अदा नहीं होते, उस पर वाजिब है के तसहीह ए हरुफ़ में रात दिन पूरी कोशिश करे, और अगर सहीह ख़्वाँ की इक़्तदा कर सकता हो तोजहाँ तक मुमकिन हो, उस की इक़्तदा करे, या वह आयतें पढ़े जिस के हरुफ़ सहीह अदा कर सकता हो, और यह दोनों सूरतें नामुमकिन हों तो ज़माना ए कोशिश में उसकी अपनी नमाज़ हो जाएगी, और अपने मिस्ल दूसरे की इमामत भी कर सकता है, यानी उसकी के वह भी उस हरुफ़ को सही न पड़ता हो, जिस को यह, और अगर उस से जो हरुफ़ अदा नहीं होता, दूसरा उस को अदा कर लेता है, मगर कोई दूसरा हरुफ़ उस से अदा नहीं होता तो एक दूसरे की इमामत नहीं कर सकता, और अगर कोशिश भी नहीं करता तो उसकी ख़ुद भी नहीं होती, दूसरे की उस के पीछे क्या होगी।
आज कल आम लोग इस में मुब्तिला हैं के ग़लत पढ़ते हैं और कोशिश नहीं करते, उन की नमाज़ें ख़ुद बातिल हैं, इमामत दरकिनार।

मसला: जिस ने .अज़ीम को ظ के बजाय ز पढ़ दिया तो नमाज़ जाती रही, जिससे अज़ीम सही अदा न हो वह **سبحان ربی الکریم**पढ़े।

मसला: उम्मी पर वाजिब है के रात दिन कोशिश करे, यहां तक के बक़द्र ए फ़र्ज़ क़ुरान मजीद याद कर ले, वरना عنداللہ تعالیٰ माज़ूर नहीं।

1) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी ने तहरीर फ़रमाया:" हरुफ़ को उनकी सिफ़ात ए शिद्दत व जहर व इन दोनों की मिसालों को पूरे हक़ूक़ दिए जाएं। इज़्हार व इख़्फ़ा व तफ़ख़ीम व तरक़ीक़ वग़ैरह मोहसिनात का लिहाज़ रखा जाए। यह मसनून है और इस का तर्क मकरूह व नापसंद, और इस का एहतमाम फ़रायज़ व वाजिबात में तरावीह से ज़्यादा, और तरावीह में नफ़िल ए मुतलक़ से ज़्यादा ।"

2) वाजिब व इजमायी मद्दे मुत्तसिल है। मुनफसिल का तर्क जायज़, व लिहाज़ा उस का नाम ही मद्दे जायज़ रखा गया और जिस हरुफ़ ए मद के बाद सुकून लाज़िम हो, जैसे ضالین،الم" वहाँ भी मद बिल इज्मा वाजिब, और जिस के बाद सकून आरिज़ हो, जैसे

العالمین،الرحیم،العباد،یوقنون

बहालत ए वक़्फ़ या یا قا ل اللہم बहालत ए इदगाम वहाँ मद व क़सर दोनों जायज़। इस क़द्र तरतील फ़र्ज़ व वाजिब है। और इस का तारिक गुनाहगार, मगर फ़रायज़ ए नमाज़ से नहीं के तर्क मुफ़सिद ए नमाज़ हो"।

3) "बिलाशुबा इतनी तजवीद जिस से तसहीह ए हरुफ़ हो, और ग़लत ख़्वानी से बचे, फर्ज़ ए ऐन है।"

जनाज़ा और दफ़न से मुताअल्लिक़ बाज़ अमूर और हमारी इस्लामी ज़िम्मेदारियां

:मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा रज़वी साहब

इस्लाम की अकमलियत का यह पहलू ख़ास तौर पर लायक़ ए ग़ौर है के इस में कोई एक गोशा ए हयात ऐसा नहीं जिस में रहनुमायी न हो, बल्कि बाद अज़ हयात भी एक एक पहलू का इहाता कर लिया गया है। रिश्ता ए हयात मुनक़ताअ हो जाने के बाद भी हक़ूक़ मुतय्यन हैं, जिनकी पास दारी की तालीम मय्यत के अक़ारिब और मुतवस्सिलीन की है,
इस तहरीर में हम जनाज़ा से मुतअल्लिक़ बाज़ एहतियातें और ज़िम्मेदारियां बयान करेंगे, इंशा अल्लाह।

जल्दी का हुक्म:
जनाज़ जब क़ब्रिस्तान ले जाने के लिए तैयार हो जाए तो देर नहीं करनी चाहिए बल्कि जल्द अज़ जल्द क़ब्रिस्तान ले जाना चाहिए, दफ़नाने में जल्दी करने का हुक्म दिया गया है, चुनाचे बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अबु हुरेराह रदि अल्लाहो तआला अन्हु ने हुज़ूर अक़दस सल्लाहो तआला अलयह वसल्लम से रिवायत किया के आप ने इरशाद फ़रमाया के जनाज़ा ले जाने में जल्दी करो।

जनाज़ा उठाने का सुन्नत तरीका:
जनाज़ा उठाने का सुन्नत तरीक़ा यह है के 4 शख़्स जनाज़ा इस तरह उठाएं के हर शख़्स एक पाया ले, अगर सिर्फ़ दो शख़्सों ने जनाज़ा उठाया यानी एक ने सरहाने के दोनों पाए और दूसरे ने पायंती के दोनो पाए उठाए तो इस तरह बिला ज़रूरत उठाना मकरूह है, और अगर ज़रूरत या मजबूरी है तो हर्ज नहीं, मसलन जगह तंग है के 4 आदमी नहीं उठा सकते तो ज़रूरत की बिना पर 2 आदमी उठा सकते हैं,

कंधा देना:
कंधा देने का सुन्नत तरीक़ा यह है के चारों पायों को कंधा दे, पहले सिरहाने की तरफ़ के दाहिने पाए को कंधा दे, फ़िर पायंती के तरफ़ के दाहिने पाए को, फ़िर सिरहाने की तरफ़ के बाएं पाए को, फ़िर पायंती की तरफ़ के बाएँ पाए को कंधा दे,
हदीस शरीफ़ में है के: जो जनाज़ा ले कर 40 क़दम चले उस 40 कबीरा गुनाह मिटा दिए जाएंगे....।
एक दूसरी हदीस शरीफ़ में है के: जो जनाज़ा के चार पायों को कंधा दे अल्लाह तआला उसकी हतमी यानी कामिल मग़फ़िरत फ़रमा देगा।

जनाज़ा ले चलने के आदाब:
1) जनाज़ा ले चलने में चारपाई यानी जनाज़ा के पाए को हाथ से पकड़ कर कंधे पर रखना चाहिए, माल या सामान की तरह गरदन या पीठ पर लादना मकरूह है, इस से जनाज़े के इकराम का अंदाज़ा होता है, के मुसलमान की मय्यत एहतराम की मुस्तहिक़ है।
2) छोटा बच्चा जिस को ब आसानी गोद में उठाया जा सके ऐसे जनाज़े को एक शख़्स दोनों हाथों में उठा चले और यके बाद दीगरे मय्यत को लोग हाथों हाथ लेते रहें।

3) फतावा आलम गीरी में है: जनाज़ा ले चलने में सर आगे होना चाहिए,
4) जनाज़ा मोअतदिल तेज़ी से ले चलें, इतना तेज़ नहीं चलना चाहिए के मय्यत को झटका लगे,

5) अबु दाऊद शरीफ़ की हदीस है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदि अल्लाहो तआला अन्हु ने फ़रमाया के हम ने नबी ए अकरम सल्लाहो तआला अलयह वसल्लम से जनाज़ा के साथ चलने के मुतल्लिक दरियाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया के दौड़ने से कमतर चाल हो ।

6) जनाज़े के साथ चलने वालों को बेहतर है के पीछे चलें, किसी वजह से आगे चलें तो दूर हो कर चलें के साथियों में शुमार न हों।
7) अगर सवारी पर हों तो सवारी को जनाज़े से पीछे रखें, सवारी पर सवार जनाज़े के आगे चलना मना है।
8) तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदि अल्लाह तआला अन्ह से रिवायत है के रसूल ए अकरम सल्लाहो अलयह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया के जनाज़ा मतबूअ है, ताबेअ नहीं। जो आगे चले जनाज़े के साथ नहीं।

9) जनाज़े के साथ औरतों का जाना फ़ितना है और मय्यत के लिए बाइस ए तकलीफ़।

10) आम तौर पर लोगों में मशहूर है के जनाज़ा आता देख कर खड़े हो जाना चाहिए, इस बाबत रिवायत भी पेश की जाती है लेकिन यह मनसूख़ के हुक्म में है,
मिरात उल मनाजीह शरह मिश्कात के हवाले से मौलाना अब्दुस सत्तार हमदानी लिखते हैं: अव्वलन मय्यत के लिए खड़ा हो जाने का हुक्म था या तो मय्यत की ताज़ीम के लिए या साथ चलने वाले फ़रिश्तों की या मौत की घबराहट के इज़हार के लिए लेकिन यह हुक्म बाद में मनसूख़ हो गया। लिहाज़ा खड़े होने से एहतराज़ होना चाहिए।

11) जनाज़े के साथ चलने वालों को ख़ामोश रहना चाहिए, दुनिया की बातें न करें, न हँसे, ज़िक्र करना चाहे तो दिल में करे ब लिहाज़ ए ज़माना उल्मा ने ज़िक्रे जहर की इजाज़त दी है, इस लिए कलमा या बारगाह ए रिसालत में नात व दुरूद की नज़र पेश की जाती है।

12) अल्लाह का इरशाद है: जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे
एक और जगह इरशाद है: और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर के फ़लह पाओ

इस रु से अल्लाह का ज़िक्र हर हाल में मुस्तहसन है, तो जनाज़ा के साथ ज़िक्र, कलमा या दुआ व नात से मक़सूद अल्लाह का ज़िक्र है। रही बात ख़ामोश रहने की तो वह अल्लाह की याद, हश्र, मौत से मुताल्लिक़ ग़ौर व फ़िक्र के लिए थी, और ज़माना ऐसा बदला के लोग ख़ामोश रह कर बजाय आख़िरत की फ़िक्र के दुनिया मे़ ग़ौर करने लगे तो हिकमत के तहत अस्लाफ ने ज़बान से कम आवाज़ से ज़िक्र की इजाज़त दी

13) जनाज़ा के साथ नात बुलन्द आवाज़ से पढ़ना जायज़ है,

बाज़ बातें :
1) शौहर अपनी बीवी के जनाज़े को हाथ लगा सकता है और कंधा दे सकता है अवाम में ग़लत मशहूर है के शौहर कंधा नहीं दे सकता, हाँ अपनी मुर्दा बीवी के जिस्म को हाथ नहीं लगा सकता।

2) जनाज़ा पर फूल डाल सकते हैं, फूल तस्बीह व तहलील करते हैं इस ग़र्ज़ से डालें तो हर्ज नहीं।

3) आलमगीरी में है के: अगर जनाज़ा पड़ोसी या रिश्तेदार या किसी नेक शख़्स का है तो उस जनाज़ा के साथ जाना नफ़िल नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है।

4) जो शख़्स जनाज़े में शरीक हो उसे बग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना चाहिए , और नमाज़ के बाद दफ़न से पहले औलिया ए मय्यत यानी मय्यत के क़रीबी रिश्तेदार से इजाज़त लेकर वापस हो सकता है और दफ़न के बाद इस इजाज़त की भी ज़रूरत नही।

5) आलमगीरी में है: जनाज़ा जब तक ज़मीन पर न रखा जाए शामिल होने वालों को बैठना मकरूह है, और जनाज़ा ज़मीन पर रख देने के बाद बेज़रूरत खड़ा नहीं रहना चाहिए।
इसी में है के: जनाज़ा इस तरह रखें के मय्यत का सर या पाँव क़िब्ले की तरफ़ न हो बल्कि इस तरह आढ़ा रखें के मय्यत की दाहिनी करवट क़िब्ला की तरफ़ हो।

नमाज़ ए जनाज़ा:
नमाज़ ए जनाज़ा फ़र्ज़ ए किफ़ाया है, यानी अगर एक शख़्स ने भी पढ़ ली तो सब के ज़िम्मा से फ़र्ज़ अदा हो गया और किसी ने भी न पढ़ी तो जिस जिस शख़्स को इंतक़ाल की ख़बर पहुँची थी और उन्होंने नमाज़ जनाज़ा न पढ़ी वो सब गुनाहगार हुए,

एक ख़राबी यह देखी जा रही है के लोग मय्यत के साथ जाते ज़रूर हैं, बाज़ लोग नमाज़ नहीं पढ़ते, क़ब्रिस्तान में बैठकर इधर उधर की बातों में मशग़ूल हो जाते हैं, और नमाज़ से जी चुराते हैं, यह ग़लत है मय्यत में शिरकत की और नमाज़ नहीं पढ़ी, बाज़ यह उज्र करते हैं के हमारा ग़ुस्ल नहीं , या वज़ू नहीं, पहली बात तो यह के मुसलमान और नापाक? बे ग़ुस्ल के रहना यह इस्लामी फ़ितरत के ख़िलाफ़ है, तहारत फ़ौरन हासिल करना चाहिए, और बे वुज़ू हों तो वुज़ू बना कर नमाज़ ए जनाज़ा अदा करनी चाहिए। उम्मुल मोमेनीन हज़रत मयमूना रदि अल्लाहो तआला अन्हा से मरवी है हदीस शरीफ़ में है: जिस मुर्दे पर मुसलमानों का एक गिरोह नमाज़ पढ़े उन की शफ़ाअत उस (मय्यत) के हक़ में क़ुबूल होती है।

नमाज़ ए जनाज़ा में आख़री सफ़ को तमाम सफ़ों पर फ़ज़ीलत है, हदीस शरीफ़ में है: जिस जनाज़ा पर तीन सफ़ों ने नमाज़ पढ़ी, उस के लिए जन्नत वाजिब हो गयी।

तवज्जो तलब अमूर:
नमाज़ ए जनाज़ा में आख़री यानी चौथी तकबीर के बाद फौरन हाथ छोड़ दे फिर सलाम फेरे।
बाज़ का ख़्याल है के बे नमाज़ी के जनाज़ा की नमाज़ नहीं पढ़ना चाहिए यह ख़्याल ग़लत है। हर मुसलमान के जनाज़ा की नमाज़ फ़र्ज़ ए कफ़ाया है। जिस ने ख़ुदकुशी की है उस की भी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी जाएगी और इसाले सवाब भी किया जाएगा। मुर्तद जिसके अक़ायद हद्दे कुफ्र तक पहुँच चुके हो और ग़ुस्ताख़ ए रसूल की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ना हराम,
इरशाद ए इलाही है: और उन में से किसी की मय्यत पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े रहना, बेशक वो अल्लाह और उसके रसूल से मुनकिर हुए और फ़िस्क़ में ही मर गए।

मुसलमान की क़ब्र की ताज़ीम:
आज कल मुस्लिम कब्रिस्तानों की बे हुरमती आम है, आला हज़रत अलेह रहमा से मक़ाबिर ए मुसलेमीन से मुताल्लिक़ सवालात हुए तो इरशाद फ़रमाया: क़ब्रों पर चलने की मुमानअत है न के जूता पहनना के सख़्त तौहीन ए अमवात ए मुस्लेमीन है हाँ जो क़दीम रास्ता क़ब्रिस्तान में हो जिस में क़ब्र

नहीं उस में चलना जायज़ है, अगर च जूता पहने हो। क़ब्रों पर घोड़े बांधना, चारपाई बिछाना, सोना, बैठना सब मना है।
दूसरी जगह तहरीर फ़रमाते हैं: क़ुबूर ए मुसलेमीन पर चलना जायज़ नहीं। इन पर पाँव रखना जायज़ नहीं यहाँ तक के अयम्मा ने तसरीह फ़रमाई है के क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता पैदा हुआ हो उस में चलना हराम है, और जिन के अक़रिबा ऐसी जगह दफ़न हों के उन के गिर्द क़ब्रें हो गयी हों और उसे उनकी क़बूर तक और क़ब्रों पर पाँव रखे बग़ैर जाना नामुमकिन हो, दूर ही से फ़तिहा पढ़े और पास न जाए।
क़ब्र पर नमाज़ पढ़ना हराम, क़ब्र की तरफ़ नमाज़ पढ़ना हराम, और मुसलमान की क़ब्र पर क़दम रखना हराम, कब्रों पर "मस्जिद बनाना" या ज़िराअत (खेती) वग़ैराह करना हराम।

अल्लाह तआला मय्यत के इकराम, हक़ूक़ की अदायगी और फ़िक्रे आख़िरत की तौफ़ीक़ दे। हमें अपने मरहूमीन के लिए आमाले सुआलेहा का ज़ौक़ बख़्शे, आमीन।

इस्लाम में औरत के हुक़ूक़

:मौलाना जावेद रज़ा मरकज़ी साहब

بسم اللہ الرحمن الرحیم

तश्कील ए समाज में जिस क़द्र मर्द का हिस्सा है उतना ही औरत का भी है अल्लाह ने जो फ़रायज़ औरत के साथ मुताल्लिक़ किए है तो ज़रूरी था औरत उन सिफ़ात की हामिल हो जो उस के फ़रायज़ की अदायगी में मददगार हों आप देखें औरत में शर्म व हया ज़ेवर का काम करती है उसकी ममता बच्चों के लिए बेश क़ीमती सरमाया है जिस का कोई बदल नहीं, लतीफ़ व नाज़ुक होना उसको मरकज़ ए मोहब्बत बनाता है तो जहाँ वह मरकज़ ए मोहब्बत है, शर्म व हया की पैकर है, ममता का एक बेबहा सरमाया है, उसके साथ साथ बदन के ऐतबार से मर्द के मुक़ाबले में कमज़ोर भी है।

तो जहां वो मोहब्बत का मरकज़ बनी ठीक उसी तरह उसका इस्तिहसाल शुरू हुआ ज़ुल्म व ज़ियाद्ती का शिकार हुई घर वालिद का हो या ससुराल हर जगह जब्र व तशद्दुद का निशाना बनी।

जब नबी करीम सल्लाहो तआला अलयह वसल्लम की बेअसत हुई दुनिया में कई धर्म मौजूद थे मगर औरतों को सिर्फ़ अपनी तफ़रीह का सामान समझा जा रहा था लोग औरत को सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश पूरी करने का ज़रिया समझ रहे थे उस के जीने का हक़, आज़ादी ए निकाह का हक़, अपने माल में तसर्रुफ़ की आज़ादी का हक़, वालिद के माल में हक़, बच्चों पर औरत के हुक़ूक़, जिस का शौहर मर जाए उस को दूसरी शादी का हक़, तमाम हुक़ूक़ को ग़सब कर दिया गया था गोया औरत को इंसान नहीं समझा जाता था।
मोहसिन ए इंसानियत सरापा रहमत नबी करीम सल्लाहो अलयह वसल्लम ने औरत के हुक़ूक़ के तहफ़्फ़ुज़ की बात की जो लोगों ने धर्म के नाम पर छीन लिए थे वो हुक़ूक़ औरतों को दिलवाए सिर्फ़ उस वक़्त नहीं बल्कि उन को एक क़ानून एक ज़ाब्ता बना दिया गया जिस से पज़मुर्दा चेहरों पर ताज़गी आ गयी समाज में जिसकी हालत लायक़ ए अफ़सोस थी वो लायक़ ए फ़ख़्र बन गयी।
चंद बातें अर्ज़ हैं के इस्लाम ने औरतों को क्या क्या हुक़ूक़ दिए हैं:

ज़िन्दा रहने का हक़:
ज़माना ए क़दीम में लोग अपनी बच्चियों को सिर्फ़ इस लिए मार देते या ज़िन्दा दफ़न कर देते थे के वह उनके लिए बयसे आर थीं। इस भयानक ज़ालिम समाज में मेरे मुस्तफ़ा सल्ललाहो तआला अलयह वसल्लम ने बेटी बचाओ की आवाज़ बुलन्द की और न सिर्फ़ आवाज़ बुलन्द की बल्कि आप सल्ललाहो अलयह वसल्लम ने अमली ज़िन्दगी में करके भी बता दिया।और जो बेटी लोगों के लिए आर और बेइज़्ज़ती का सबब थी लोगों के लिए इज़्ज़त का सबब बन गयी। आप सल्ललाहो तआला अलयह वसल्लम ने बेटी को माँ-बाप के लिए रहमत क़रार दिया और अच्छे तरीक़े से परवरिश करने वालों को जन्नत की बिशारत भी दी।
लोगों के बनाए हुए तागूती निज़ाम को पाश पाश कर दिया वही लोग जो बच्ची की पैदाइश पर रंजीदा हो जाते थे अब ख़ुशियां मनाने लगे यह सब तालीम ए मुस्तफ़ा सल्ललाहो अलयह वसल्लम ही है।

शादी के मौक़े पर बालिग़ बच्ची की मर्ज़ी का हक़:
आज लोग आज़ादी के नाम पर औरतों को बरग़ला कर सड़कों और बाज़ारों की ज़ीनत बना कर अपनी हवस की तस्कीन का सामान कर रहे हैं और कुछ नावाक़िफ़ ख़्वातीन ए इस्लाम इस दाम ए फ़रेब में आकर उन के दोश बदोश नज़र आ रही हैं मगर काश यह इस्लाम को जानती तो कभी इस दाम ए फरेब में आकर अपनी दुनिया व आख़िरत बरबाद न करतीं इस ज़ालिम समाज ने इस तरह के

क़वानीन बना रखे थे जिस की वजह से औरत अपनी शादी में हाँ या न का कोई इख़्तियार नहीं रखती थी आज भी कुछ समाजों में वह पुराने रिवाज आप को मिल जाएंगे के वक़्त ए शादी औरत की राय की कोई अहमियत नहीं मगर क़ुर्बान जाऊं निज़ाम ए इस्लाम पर के जब लड़की बालिग़ हो तो ऐन निकाह के वक़्त भी उस से लड़के की मारफत कराने के बाद इजाज़त तलब की जाती है। अगर लड़की इंकार कर दे तो कोई दम नहीं रखता के उस की शादी करा दे।

दुनिया में शोर करने वाले लाएं इस्लाम के मुक़ाबले में कोई निज़ाम जो भी ला सकते हों आज जो कोर्ट बनाए गए हैं वहाँ पर मर्ज़ी के मुताबिक़ शादी कराई जाती है और उस को मॉडर्न कहा जाता है मगर इस्लाम ने उस दौर में औरत को अपनी ज़िन्दगी का फ़ैसला करने का हक़ अता कर दिया जब औरत का सर हिलाना भी जुर्म ए अज़ीम था।

नोट:
जिस का शौहर मर जाता है उस को कुछ जगह ज़िन्दा क़त्ल कर दिया जाता था घरों में क़ैद कर दिया जाता था और ज़माने की मनहूसा वह क़रार दी जाती गोया शौहर क्या मर गया समाज और कुछ धर्म के ठेकेदार या तो मार देते या ज़िन्दा लाश बना देते थे। मगर क़ुर्बान जाऊँ लोगो मेरे मुस्तफ़ा सल्लाहो अलयह वसल्लम पर जिनकी तालीम ने औरतों को नयी ज़िन्दगी अता कर दी और जिस तरह मर्द को शादी का इख़्तियार है ठीक इसी तरह औरतों को हक़ मिला

मुफ़ीद मशवरा:
आज औरतों की हालत को बेहतर करने के लिए बहुत सी तन्ज़ीमें काम कर रही हैं मगर हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं ऐ लोगों औरत की इज़्ज़त, माल, जान हर चीज़ की हिफ़ाज़त का बेहतरीन निज़ाम सिर्फ़ इस्लाम है

औरतों की माली हालत को बेहतर बनाने का निज़ाम:
दुनिया में लोगों ने जो भी निज़ाम क़ायम किए उस में औरतों को महरूम रखा गया पूरी तरह से उन को शौहरों के ऊपर कर दिया गया मगर निज़ाम ए इस्लाम में औरत की जब शादी हो तो महर (शौहर की तरफ़ से दी जाने वाली चीज़) जिस की हक़दार ख़ालिस औरत है और अपने माल में तसर्रुफ़ का पूरा हक़ रखती है।
जब वालिद का इंतक़ाल हो जाए तो भाइयों के साथ औरत को भी हिस्सा मिलता है जो दुनिया में किसी समाज में रायज नहीं है। आज भी जो लोग औरत की आज़ादी का नाम ले कर सड़कों पर बे हयायी के फलक बोस नारे लगा रहे हैं उनके यहां पर भी नहीं, निज़ाम ए इस्लाम ने औरत को साहिब ए सरवत बना दिया है।
अफ़सोस आज दीनी तालीम से दूर मुसलमान उन लोगों के साथ नाचता फिर रहा है। ऐ काश यह मुसलमान इस्लामी तालीम को जानता क्योंकि यह एक मुख़्तसर मज़मून है इसलिए इस में कुल हुक़ूक़ ए निसवां का इहाता दुश्वार है यहां सिर्फ़ तीन बातों को ज़िक्र किया गया है जिन में दूसरों की देखा देखी बैनल मुसलेमीन भी मौज़ू ए बहस रहती है आँखे खोलो और देखो के जो निज़ाम ए इस्लाम ने दिया वह किसी समाज में मयस्सर नहीं जो हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त इस्लाम ने की है ग़ैरों को उसकी हवा तक नहीं लगी। अल्लाह हम सब को अपने प्यारे रसूल सल्लाहो अलयह वसल्लम के नक़्शे क़दम पर चलाए।

जुआ और घर की बरबादी

:मौलाना शोएब रज़ा निज़ामी साहब

एक सुवालेह और नेक समाज व मुआशरे के लिए जो चीज़ें ज़हर ए हलाहल से कम नहीं उन में से एक किमार बाज़ी यानी जूआ है। इसके मज़हबी, समाजी, तिब्बी, माली नुक़सानात इस क़दर हैं के जिन्हें बयान करनेके लिए एक दस्तावेज़ की ज़रूरत पड़ सकती है। मज़हबे इस्लाम ने तो इसे अव्वल वक़्त में ही नाजायज़ व हराम क़रार दिया।
फरमाने बारी तआला है:

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَاِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ

आप से शराब और जुए के मुताल्लिक़ पूछते हैं, कह दो उनमें बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं और उनका गुनाह उनके नफ़ा से बहुत बड़ा है।

और नबी ए मुकर्रम ﷺ का फ़रमान ए इबरत निशान है: **जिस ने चूसर (जुए की एक क़िस्म) खेला, उस ने गोया अपने हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और उस के ख़ून में दिए।**
अलावा अज़ीं जुए के सबब (जुआ बाज़) इन्सान, उसके अहलो अयाल, उसका कुन्बा, क़बीला हत्ता के पूरे मुआशरे की बरबादी मु मुतय्यन है। जुआ एक ऐसी लत है जो किसी को लग जाती है तो वह उस में अपने होश व हवास खो देता है।

यह सच है के जुआबाज़ हमेशा हारता नहीं, बल्कि कभी जीत भी जाता है, लेकिन उस का दिमाग़ हमेशा उलझन व तनाव का शिकार रहता है क्योंकि अगर वह हार जाए तो उसे अपने माल जाने का ग़म होता है और अगर जीत जाए तो दोबारा खेलते हुए उसे हार जाने की फ़िक्र दामनगीर होती है। ग़र्ज़ के हर तरफ़ से वह ग़म व फ़िक्र की अन्दोह नाक वादियों में मौजें खाते हैं। और उस के बाद जब अपने अहलो अयाल के पास लौटता है और उसे घर की ज़िम्मेदारियों का एहसास कराया जाता है तो फ़िर वह अपना आपा खो बैठता है और इस तरह एक बसा बसाया चमन उजड़ने लगता है।

यही नहीं बल्कि किमार बाज़ी हीजान अंगेज़ी का भी बहुत बड़ा ज़रिया है: तमाम उल्माए नफ्सियात का यह नज़रिया है के रुहानी हीजानात और इज़्तराब बहुत सी बीमारियों का बायस हैं मसलन विटामिन की कमी, ज़ख़्म ए मेदा, जुनून व दीवानगी, कमो बेश असाबी व रूहानी बीमारियाँ वग़ैरह।

यह बीमारियां ज़्यादातर हीजान ही की वजह से पैदा होती हैं। किमार बाज़ी हीजान का सब से बड़ा आमिल है। यहां तक के अमरीका का एक स्कालर कहता है कि अमेरीका में हर साल दो हज़ार अफ़राद सिर्फ़ किमार बाज़ी के हीजान से मर जाते हैं। उस का कहना है के एक पोकरा बाज़ का दिल औसतन एक मिनट में सौ से ज़्यादा मरतबा धड़कता है। कभी कभी क़मारबाज़ी से दिल व दिमाग़ पर सक्ता भी तारी हो जाता हैं। किमार बाज़ी यक़ीनी तौर पर जल्द बुढ़ापा लाने का बायस बनती है।

अलावा अज़ीं उल्माए तिब के ब-क़ौल जो शख़्स किमार बाज़ी में मशग़ूल है उस का दिल है तशननुज का शिकार नहीं होता बल्कि उसके तमाम अज़ाए जिस्म सख़्त हालात से दो चार होते हैं। उस के दिल की हरकत बढ़ जाती है। शुगर का मवाद उस के ख़ून में गिरता है, दाख़िली ग़दूदों में ख़लल वाक़ेअ होता है, चेहरे का रंग उड़ जाता है और भूख ख़त्म हो जाती है। किमार बाज़ी के ख़त्म होने पर जुआ बाज़ सोता है तो उस के अन्दर आसाबी जंग जारी होती है और जिस्म पर बहरान की कैफ़ियत तारी होती है। जुआरी अक्सर औक़ात आसाब की तस्कीन और बदन के आराम के लिए शराब और दूसरी

नशा वर चीज़ों का सहारा लेता है इस तरह शराब और किमार बाज़ी के नुक़सानात जमा हो कर फ़ज़ूं तर हो जाते हैं।

बाज़ मुहक़्क़ीन कहते हैं के किमारबाज़ एक बीमार शख़्स है। यह हमेशा रूह की निगरानी का मोहताज है। उसे हमेशा समझाना चाहिए और नफ़्सियाती ज़रियों से उसे किमार बाज़ी से रोकने की कोशिश करनी चाहिए शायद इस तरह वह अपनी इस्लाह की तरफ़ माइल हो सके।

किमार बाज़ी के इज्तिमाई नुक़सानात:
बहुत से जुआ बाज़ जीत भी जाते हैं। बाज़ औक़ात एक ही घंटे में दूसरों के हज़ारों रुप्ये उनकी जेब में चले जाते हैं। नतीजतन वह कोई पैदावारी और इक़्तसादी काम करने को तैयार नहीं होते। इस तरह इज्तिमाई पैदावार और इक़्तसादी हालत लंगड़ी हो जाती है। सही ग़ौर किया जाए तो यह वाज़ह होगा के किमारबाज़ और उनके अहलो अयाल मुआशरे पर बोझ हैं। वह मुआशरे को ज़र्राह भर फ़ायदा पहुँचाए बग़ैर उस की कमाई खाते हैं और कभी हारने की सूरत में चोरी और डाका ज़नी से अपनी हार की तलाफ़ी करते हैं।
मुख़्तसर यह के क़मारबाज़ी के नुक़सनात इतने ज़्यादा हैं के बाज़ ग़ैर मुस्लिम मुल्कों को भी उसे क़ानूनन ममनूअ क़रार देना पड़ा अगरचे वहाँ भी अमलन वसीअ पैमाने पर जुआबाज़ी का कारोबार जारी है।
मसलन बरतानिया ने 1853 ई० में, अमेरीका ने 1855 ई० में, रूस ने 1854 ई० और जर्मनी ने 1873 ई० में किमार बाज़ी के ममनूअ होने का ऐलान किया।
लेकिन आज भी इन मुमालिक में जुआबाज़ी बड़े ढड़ल्ले से चलती है। जिस के असरात इन मुमालिक में आए दिन बरबाद होते ख़ानदानों पर देखा जा सकता है, जिन की ज़बूं हाली चीख़-चीख़ कर इस क़बीह व शनीअ फेल की मज़म्मत व बुराई और तबाही बयाँ करती है।
अल्लाह रब्बुल इज़्जत हम मुसलमानों को इस बुरे काम से हमेशा बचाए रखे और शरियत के दामन से वाबस्ता रह कर अपनी ख़ुशहाल ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन